इन्सान का दिल

और संसार की अन्य श्रेष्ठ कहानियाँ

अनुवादक
शैलेन्द्र कुमार पाठक

नया भारत प्रकाशन
दिल्ली : इलाहाबाद

रूपकमल प्रकाशन, दिल्ली की ओर से
मुख्य वितरक :
नयाभारत प्रकाशन,
३६३५, अजमेरी गेट,
दिल्ली

एक रुपया पचास नए पैसे

मुद्रक
शर्मा इलेक्ट्रिक प्रेस, ३८४३, दरियागंज, दिल्ली

संग्रह में

इस संग्रह के लिए कहानियों का चयन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि कथाकार अपनी भाषा के कहानी साहित्य का प्रतिनिधित्व करता हो। साथ ही जो कथा छांटी गई है, वह भी शैली, कथानक और एक स्पष्ट दिशा-संकेत को ध्यान में रखते हुए। संग्रह की कहानियों का अपना एक दृष्टिकोण है, उनमें अन्तःस्तल को स्पर्श करने की क्षमता है। वे अपनी भाषा के गौरव को तो बढ़ा ही रही हैं, हिन्दी के नये लेखकों का भी मार्ग-दर्शन करेंगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

संग्रह में ऐसी किसी कहानी को स्थान नहीं दिया गया है जिसका उद्देश्य कोरी भावुकता, निरा मनोरंजन, सस्ती लोकप्रियता, वासना और कामुकता का नग्न उभार हो। एक आदर्श, एक विशेष दृष्टिकोण से उन्हें अनुवादित किया गया है।

इनमें से कुछ कथाओं को मैं अपने सम्पादन काल में प्रकाशित कर चुका हूँ, कुछ ऐसी हैं जो शायद पहली बार ही प्रकाशन पायेंगी। मैं श्री श्याम व्यास व रामचन्द्र 'कुसुम' के अमूल्य सहयोग का आभारी हूँ।

हिन्दी कथा प्रेमी इसका स्वागत करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

उत्तर प्रदेशीय समाज,
जानकीदास बिल्डिंग,
फव्वारा, दिल्ली

—शैलेन्द्रकुमार पाठक

कथाक्रम

चीनी कहानी

लाल पायजामा

जियन चीलिन

तुंग-पू रेलवे लाइन पर जापानियों ने अधिकार कर लिया। दो महीने पहले भी वे हमला करने के इरादे से इस गाँव में आये थे। तब गाँव में उन्हें एक भी आदमी नहीं मिला था और वे मकानों और असबाब पर ही अपना गुस्सा उतार कर चले गये थे। अभी गाँव वाले टूटे-फूटे मकान और जले हुए सामान को व्यवस्थित भी नहीं कर पाए थे। इतने में खबर मिली कि जापानी सैनिकों का फिर आगमन होने वाला है।

इसी बीच गांव में एक पत्र भी आया। उसमें लिखा था कि सैनिकों का स्वागत-सत्कार गाँव वाले दिल खोल कर करें। अगर कोई गांव वाला गांव छोड़ कर भाग गया तो शाही सैनिक गाँव को बरबाद कर देंगे। जो कुछ होने वाला था, गांव वाले उससे बेखबर नहीं थे।

गाँव की स्त्रियों ने अपने लम्बे-लम्बे केश कैंची से काटकर छोटे-छोटे कर लिए। अब उनके सिर पर सिवाय एक छोटे से बाल-समूह के और कुछ नहीं रहा।

अभी तीन महीने पहले ही स्याओसुआन ने शादी की थी। तीन महीने बाद उसकी बहू के लाल पायजामा उतार डालने से और भी अड़चन पैदा हो गई। उसका पायजामा गांव की सभी बहुओं के पायजामे से अभी तक अच्छा लगता है। उसका रंग अभी तक भी सुर्ख है। इस

समय सबसे बड़ी दिक्कत उसके सामने यह है कि वह उस पायजामे को उतार कर पहने क्या। उसके पास दूसरा कोई पायजामा भी तो नहीं है। पिछले दिनों भगदड़ में उनकी पोटली कहीं गुम हो गई थी, जिसमें उन दोनों के कपड़े थे। लौटने के बाद उन्होंने कुछ सामान तो ले लिया था, लेकिन पायजामा बनाने का ध्यान ही नहीं आया था। कई जगह खोज की, लेकिन कहीं से भी कोई दूसरा पायजामा नहीं मिल सका। निराशा में डूबी हुई वह आकर खाट पर बैठ गई।

शाम को सुआन लौटा। गांव की पंचायत में उसने कुछ बातों का विरोध किया था, और इस पर काफी गरमागरमी हो गई थी। वह बहुत उत्तेजित था। अपनी औरत को जब उसने अब भी लाल पायजामा पहने ही देखा, तो बेचारा बड़ा परेशान हुआ। उसने अपना काला पायजामा उतार कर उसकी ओर फेंकते हुए कहा कि ले इसे पहन ले।

कल तक जिस लाल पायजामे को देखकर उसे खुशी होती थी, आज उसकी आँखों में खटक रहा था। अभी तक उसकी औरत उस पायजामे की ओर देख ही रही थी। वहाँ से उठी भी नहीं थी।

सुआन यह देख कर और उत्तेजित हो गया। उसने और जोर से कहा—'इसे पहन लो।'

उसकी औरत उठी और चुपचाप उसने पायजामा पहन लिया। इसके बाद उन्होंने आपस में कमीजें भी बदल लीं।

पति को बाहर जाते देखकर वह कुछ कहना चाहती थी, लेकिन डर के कारण कुछ न कह सकी। उसके साथ-साथ आँखों में आँसू भरे चौखट तक आई।

सुआन ने उसे देखकर कहा—'जाओ अब जाकर सो जाओ। मैं कल वापस लौटूँगा।'

\+ \+ \+ \+

दूसरे दिन सूरज की किरणों के साथ ही गाँव में शान्ति-प्रचार करने

के लिए शाही सैनिक आ गये। यह दसों सैनिक घोड़ों पर सवार थे और हान चिपन (भेदी) इनके साथ पैदल आया था।

भेदी ने उन्हें गांव की चौपाल पर ले जाकर ठहराया। मुखिया से उसने कहा कि शाही सैनिकों के लिए तुरंत चाय-पानी का प्रबंध होना चाहिए। शाही सिपाही गरीबों से कोई भी वस्तु ग्रहण नहीं करेंगे, लेकिन जो भी कथा सुनने के लिए आएँ, वे अपने साथ गोभी के फूल, शलजम और अण्डे जरूर लायें।

मुखिया स्वीकृति सूचक सिर हिलाकर चला गया। चौपाल के सामने घोड़ों के सामने तो पके हुए केलों का ढेर लगा था, और शाही सैनिक पकौड़ी, चाय और अण्डों को पेट में भरते जा रहे थे।

मोटे सार्जेंट ने पूछा कि हमारे तीन सैनिक कहाँ गये ?

भेदी ने कहा—'वे खेत देखने के लिए गए हैं।'

खाना समाप्त होने के बाद भेदी ने मुखिया से कहा कि अब मुनादी करादो, जिससे सब लोग उपदेश सुनने के लिए एकत्रित हो जायें।

गांव के अस्सी घरों से अस्सी व्यक्ति उपस्थित हो गये। इनमें बच्चे भी काफी थे।

चौपाल के सामने गोभी-शलजम और अण्डों का ढेर लगा था।

सीढ़ी के ऊपर खड़े होकर सार्जेंट ने शान्ति-उपदेश शुरू किया।

"हमारी सेना कभी हार नहीं सकती, हम तो संसार में जीतने के लिए ही आये हैं। शान्ति स्थापना हमारा उद्देश्य है। हम चीन से उन डाकुओं को समाप्त करने के लिए आये हैं, जो यहाँ गड़बड़ करते हैं। चीन के जंगली डाकुओं के दल जिन्हें आठवीं पल्टन कहते हैं और जो हथियारबंद फौजी हैं, जब भी आयें, आप सब लोग तुरंत शाही सेना को उनकी खबर दें।

इसके बाद सार्जेन्ट ने गाँव वालों से सवाल करना शुरू कर दिया।

'क्या शाही सिपाही आपको मारते हैं और लूटते हैं?'

'नहीं।' गांव के मुखिया ने उत्तर दिया।

'घरबार जलाते हैं और परेशान करते हैं ?'

'नहीं।' मुखिया के जवान बेटे ने उत्तर दिया।

"क्या तुम्हें शाही सिपाहियों से डर लगता है ?'

'नहीं।'

'फिर क्या वजह है कि हमारे आने पर आप लोग गांव छोड़कर भाग जाते हैं, और डाकुओं के आने पर यहीं रहते हैं ?'

इसका गांव वालों ने कोई उत्तर नहीं दिया।

+ + +

शाही सैनिकों के जाने का समय हो रहा था लेकिन अभी तक वे तीनों सैनिक वापस नहीं लौटे थे। गांव वालों से पूछने पर उनका कुछ पता नहीं चला। मुखिया ने उन्हें खोजने के लिए कुछ आदमी भेजे, लेकिन वे भी वापस लौट आये।

मुखिया खुद ही उन्हें खोजने के लिए चल पड़ा। सबसे पहले वह सुआन के घर की ओर चला। उसने सोचा कि शायद सुआन की औरत के ही शादी के कपड़े देखकर वे कहीं न अटक गये हों।

सुआन के मकान के भिड़े दरवाजों को खोलकर वह अन्दर गया। उसने एक कोने में सुआन को घुटने में सिर दिये हुए बैठा पाया।

उसे इस हालत में बैठा देखकर उसे गुस्सा भी आया और हँसी भी।

वह बोला—'वाह, क्या कहने हैं इस बहादुरी के। मैं तो यह कभी सोच भी नहीं सकता था कि तुम इस प्रकार औरतों की तरह छिपकर बैठोगे। हाँ, यह तो बताओ कि तुम्हारी औरत उन तीनों सैनिकों को ललचाकर किधर ले गई है।

इस बीच जब सुआन की औरत ने मुँह उठाकर मुखिया की ओर देखा तो बेचारा बड़ा झेंपा और तुरन्त ही बाहर निकल आया।

बेचारा मुखिया एक-एक घर को देखता फिरा। कहीं पता नहीं चला। वह जीवन की आशा छोड़कर चौपाल की ओर चला। उसे तब होश आया, जब उसने अपने को सामने वाले वृक्ष से बँधा हुआ पाया।

गांव वाले बड़े भयभीत थे कि पता नहीं अब यह क्या क़यामत ढायेंगे।

+ + + +

इतने में कुछ लोग एक लड़के को पकड़ कर लाये कि इसे मालूम है। पूछने पर उसने बताया कि वेएक औरत के पीछे-पीछे जो लाल पायजामा पहने थी, गये हैं। उस औरत के पीछे-पीछे ही मैंने उन्हें बहुत दूर तक जाते देखा है।

सार्जेन्ट क्रोध से जल रहा था। उसने कहा—'अभी फौरन मेरे सामने लाल पायजामा वालों को लाओ।'

अचानक पीछे कुछ आहट-सी हुई, लगा कि कोई तेज आवाज में कुछ कह रहा है। आवाज तो साफ सुनाई नहीं दे रही थी। लेकिन एक आदमी चिल्ला उठा, 'लो वह लाल पायजामा।'

इसी बीच सब चिल्ला उठे—'हाँ, हाँ, लाल पायजामा ही है और इधर ही आ रहा है।'

एक व्यक्ति तेजी से कदम बढ़ाता हुआ इसी ओर चला आ रहा था और उसके पीछे-पीछे खाकी वर्दी पहने अनेक फौजी चौपाल की ओर चले आ रहे थे।

इन्हें देखते ही सातों शाही सैनिक बड़ी बहादुरी से अपने घोड़ों पर सवार होकर भाग निकले। भेदी भी एक घोड़े पर चढ़कर भागने के प्रयत्न में था कि लोगों ने उसे काबू कर लिया।

इतने में सुआन उन गुरिल्ला फौजियों के साथ आ पहुँचा।

उसने कहा—'यह सब खाने का सामान, तीनों राइफलें और घोड़े इन गुरिल्लों को दे दो। और हाँ, क्या अब हम इस गांव में सुरक्षित रह सकेंगे।'

गांव वालों में से किसी ने कुछ उत्तर न दिया।

सुआन बोला—अब, हमारे सामने एक ही रास्ता है कि हम अपना सब सामान लेकर गुरिल्लाओं से मिल जायें।'

गांव के सब लोगों ने समर्थन किया।

थोड़ी ही देर में गांव वालों की एक लम्बी कतार, जिसकी संख्या कई सौ हो गई थी, धीरे-धीरे पहाड़ की ओर बढ़ती जा रही थी।

सुग्रान और उसकी औरत ने अभी तक अपने कपड़े नहीं बदले थे।

+ + + +

रात को गुरिल्लाओं के सदर मुकाम में इन नये गुरिल्लाओं का अभिनन्दन करने के लिए एक सभा हुई। जिसमें सुग्रान की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई कि उसने किस हिकमत से गांव को बचाया।

अध्यक्ष ने कहा कि वे सुग्रान को उसकी वीरता और देश प्रेम के लिए विशेष पुरस्कार देने के लिए प्रधान कार्यालय को लिखेंगे। क्योंकि सुग्रान की चतुरता से ही तीन जापानी और एक भेदिया पकड़े जा सके हैं तथा एक घोड़ा और तीन रायफलें भी प्राप्त हुई हैं।

इनाम की बात सुनकर सुग्रान बहुत प्रसन्न हुआ और हिम्मत बाँध कर बोला—'मुझे और कुछ नहीं चाहिए, सिर्फ मुझे एक पोशाक दे दीजिये।'

उनकी दृष्टि सुग्रान के कपड़ों पर पड़ी तो वह लाल पायजाम देख कर हँस पड़े।

उसे तुरंत खाकी बर्दी दी गई—जिसे पहन कर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। सब्ज कमीज और लाल पायजामा को उतार कर उसे तह किया और इसके बाद वह उस स्थान की ओर गया, जहां स्त्रियों के लिए जगह बनाई गई थी।

वहाँ उसने अपनी बीवी के हाथ में पायजामा और कमीज देते हुए हंस कर कहा—'लो, रख लो। जब कभी अपने अच्छे दिन आयेंगे, तब इन्हें पहनना।'

हंगेरियन कहानी

सहानुभूति

इलोन इलियास

एक जवान हिरनी और उसका छौना जैतून के पेड़ की जड़ के पास लेटे पिघलती बरफ पर सिमटे धूप सेंक रहे थे।

सूसन मेरी बांह पकड़ कर चिल्लाई—"देखो"।

लेकिन जब तक मैं भी उन दोनों को देख चुका था।

इस अजीब और सुन्दर हेमंती सबेरे को फूटे अभी घंण्टा-डेढ़ घण्टा हुआ होगा और तभी हम लम्बी ढालुवां चरागाह तक पहुँचने के लिए जंगल को चीरते-फांदते निकल पड़े थे। पहले दिन उत्तर-पूर्व से बरफ की तीखी और कँपाने वाली हवायें चल चुकी थीं। अब हवा का रुख दक्खिन-पश्चिम हो गया था, पर बरफ गिरना तब भी बंद नहीं हुआ था। आज प्रकाश जगमगा रहा था, रक्तिम लालिमा उत्फुल्ल थी। चारों दिशायें मचल रही थीं ऐसा लगता था जैसे हवा थोड़ी देर विश्राम कर रही है—रोशनी, ऐसा लगता था मानो ऊपर से नहीं आ रही, बल्कि शाँत नदी के समान हमारे सामने चौड़ी धारा में बही चली आ रही है। चटकीली, चमकीली, उल्लासमयी—मानों सैकड़ों घुंघरू बरफ की सतह थिरक रहे हों; ऐसी थी वह रोशनी लगता था, जैसे सबेरा गीत गा रहा हो। उजली धूप की किरणें मानो अभी बोल पड़ेगी—भंवरदारलहरियों में और हवा में तैरने वाले बरफ के अन देखे नन्हें नन्हें कणों में। पर सर्दी फिर भी थी कुहरा की जवानी अभी बुझी नहीं थी। दाँत रह-रह कर

बज उठते थे—कान 'झननझन' रहे थे और नाखूनों के पोरवे भी दर्द महसूस कर रहे थे।

लालसा—शरीर में उत्कंठा उत्पन्न करने वाली और मुँह का स्वाद एक बारगी नष्ट कर देने वाली—इस सर्द चमक में जम-सी गई थी। धीरे-धीरे यह बिलकुल पतली लकीर-सी, पारदर्शी और धुँधली लगने लगती। लगता जैसे उत्साह की एक टांग टूट गई है और हम लँगड़ाते चले जा रहे हैं। न दिल डूबता है और न तैरता। सिर्फ जैसे-तैसे उस चमकीली बरफ में चल रहे थे—चल रहे थे—शाँत और खोये-खोये से।

ढालुवान पर आकर हमें एक खरगोश के पदचिन्ह दीखे। बिलकुल नये और ताजा थे। उसे वहां से गुजरे दो-तीन घण्टे से अधिक समय नहीं हुआ होगा। शायद सूसन की बंदूक के धड़ाके ने उसे वहाँ से भगा दिया था।

'चलो उसे ढूंढ़ निकालें!' मैं चिल्लाया।

उत्तेजित और प्रसन्न होकर हम रिज की तरफ लम्बी ढलुवान पर उसकी खोज में बढ़ चले। कल्पना में हमने उसे देखा, जैसे उसने प्रभात काल में किसी बगीचे में जाकर किसी पेड़ से ताजा फल तोड़ के खाकरके या बर्फ पर पड़ी किसी जड़ को निगल कर इन हिस्सों में आशंका एवम् भय से लापरवाह धूपधाम कर—अब पड़ोस के जंगल की किसी झाड़ी में अपने लिए विश्राम स्थल खोज लिया होगा।

हम चुपचाप आगे बढ़ते रहे। हमारे पैर मुलायम धँसकती बरफ में बार-बार घुप जाते थे। लेकिन हमें शीघ्र ही ठहर जाना पड़ा। अभी तक सीधे चले आने वाले पद-चिन्ह यहां आकर एकाएक रुक गये थे। अब किसी भी दिशा में उनका कोई निशान नहीं था। क्या उस जंतु ने अपने को सशरीर वहां से उचका लिया और उस चमकीली धूप में विलीन हो गया?

क्यों, नहीं? हमने एक-दूसरे से हंसते हुए पूछा।

अचरज भरी ऐसी घटना हो तो सकती है। और क्या ऐसा नहीं

हो सकता कि वह अपने ही पद-चिन्हों को सिमेट कर एक रस्सी बना कर उन्हें अपने कंधे पर डाल कर जंगल के किसी कोने में छिप गया हो ?

हमारे नेत्र एक बार फिर मिले। उनमें आश्चर्य, निराशा और थकान के भाव थे। हम सचमुच ही धोखा खा गये। हमने उसे काफी खोजा, बहुत खोजा लेकिन सब व्यर्थ रहा। हमें उसके पैर के निशान किसी ओर भी तो नहीं दीखे।

सहसा सूसन हँस पड़ी, बोली—मेरा खयाल है, वह खरगोश अपने पैरों वापस लौट गया है—अपनी खोह में !

उसकी इस बात के बाद हमने अपनी खोज बंद कर दी और तब हमने देखा—अपने को देख ने की इजाजत दी। कि यही थी बात जो कि उस जंतु ने अपनाई थी। वह अपने ही पैरों के निशानों पर करीब दस गज तक बड़ी होशियारी से वापस लौटा था।

देखो ! हमने एक-दूसरे को बताया। यह स्थान था, जहां से वह अपने पद-चिन्हों को छोड़कर झाड़ियों की तरफ कूद गया था। काफी लम्बी कूद थी। कितनी लम्बी ? छै गज—या सात ? उसने सोचा होगा, शायद, कि अपने पैरों के निशानों में ऐसी खलबली मचा कर वह पीछा करने वालों को धोखा देने में कामयाब हो गया। इसलिए वह वहाँ से कुदान लगा गया और अब कहीं बरफ ढकी झाड़ियों में ऊंघ रहा होगा। क्या पता जहाँ हम खड़े हैं उसी के बिलकुल पास ही कहीं आराम कर रहा हो ? यह सर्वमान्य तरीका है : सब खरगोश यों ही कूदते हैं। क्या सिर्फ इतनी बुद्धिमानी ही उनके मूर्ख पुरखे उन्हें सिखा सके हैं ?

बेचारे को आराम की साँस लेन दे। मैंने सूसन से कहा। उसने बच्चों जैसी किलकारी भरी और एक बरफ की गेंद पड़ोस के झुरमुट में लुड़का दी।

अंधा संसोटा बंदूक चलाने से कोई लाभ नहीं।

हम उसे जहाँ भी वह था, वहीं छोड़ कर कर चल पड़े। ढलुवान के नीचे पंछियों का समूह बरफ के ऊपर पंख फैलाये मस्ती में भर रहा था। रोशनी उभर रही थी। वातावरण का आनन्द बढ़ता जा रहा था। मैंने चिड़ियों की चलती-फिरती परछाँइयों को देखा—लगा जैसे उनकी पुकार है, हमें गोली मारो। प्रकाश इतना था कि छाया ग्रसना अचरज ही लगा। क्या यह संभव नहीं कि परछाईं पर वार किया जाय और पंछी तड़ाक से नीचे आ गिरे।

लेकिन सूसन किसी को मारने के मूड़ में न थी। वह बरफ की गेंदें फेंकने में अधिक दिलचस्पी दिखा रही थी। वह मुझपर बेदर्दी से बरफ के ढेलों से वार कर रही थी। बरफ के वे ढेले पहले बिखर जाते सितारों की तरह और फिर वह रोशनी के कारण मधुमक्खियों के झुण्ड की तरह एकत्र होते और तब सूरज की किरणें उन्हें लील जातीं।

और जब यह खेल भी खत्म हो गया, तो हम शांत हो गये। हमें घर पहुँचने के समय तक आधा घण्टा और फुदकने को था और मुझे गाड़ी से जाने के लिए अभी आधा दिन पड़ा था। हम चलते रहे—जंगल और चरागाह पीछे छूट गये और पगडंडी से सड़क पर आ गये तब हमने उस हिरनी और छौने को बैठे देखा।

× × ×

वह छोटा-सा जंतु कुत्ते की तरह लेटा था—अगले पैर पेट के नीचे मुड़े हुए थे। और वह सिर को तकिया बनाये टिका हुआ था। पर माँ जाग रही थी, और गर्मी का लुत्फ ले रही थी। ऊँचा उठा सिर 'इधर-उधर हिलता और गर्मी के कारण उत्तेजित सहमा-सा शरीर। जैसे हम खड़े हुए, उसने धीमे से अपना सिर मोड़ा और हमें भरपूर निगाहों से देखा।

और हमने भी उसकी आंखों से आँखें मिला दीं।

सूसन बोली—'देखते रहो, मैं उसे मंत्र मुग्ध करती हूँ।

हमारे और उसके बीच पन्द्रह डगों का फासला था।

'मैं उसे बाँध कर कर तुम्हारे पास ले आती हूँ, 'लाऊँ' ?

और उसने अपने नेत्र हिरनी पर जमा दिये ।

'देखते रहना मुझे, वह बोली और उस बरफानी टुकड़े की ओर बढ़ने लगी ।

छौना उछल पड़ा और कुछ डग दौड़ा और एक दयनीय चीख उसके मुँह से निकली । हिरिनी भी उठी, धीमे-धीमे, पर उसने अपनी आँखें सूसन के चेहरे से हटाई नहीं ।'

'छि, पगली । सूसन आहिस्ता से बोली ।

वह बोली, या उसने मंत्र पढ़ा, धीमे अनुराग भरे स्वर में । एक अनोखी गति थी, अजूबा संगीत था । उसकी इस मदभरी फुसफुसाहट ने सदैव ही मुझे अनिवर्चनीय आनंद दिया है । जैतून की झाड़ियों में भी वसन्त के आगमन पर ऐसी ही संगीतलहरियाँ डोलती हैं । या हवों के पंखों पर तैरने वाला लाल-भूरा पंछी उड़ते-उड़ते जैसे संगीत छोड़ जाय । हिरिनी हिचकिचाई पर हिली नहीं स्थान से । छौना फिर धीमे से चीखा, बाल सुलभ भय के कारण ।

सूसन बोली—छि: पगली, भय किससे ?

और वह पांच डग भर चुकी थी ।

वह आहिस्ता से, हलके पैरों से चल रही थी, ऐसे मानो बरफ पर उतर रही हो और प्रत्येक पग पर वह अपना जादू वाक्य दुहरा रही थी—छि पगली······और अंत में वह हिरनी के पास जा पहुँची । हिरनी हिल-डुली नहीं ।

'मैं तुम्हें मारना चाहती तो मार सकती हूँ' । पर मारूंगी नहीं ।

बहुत चतुरता से उसने हिरनी को मुट्ठी भर बरफ दी । वह उसके हाथ को बिना किसी सोच-बिचार के चाटने लगी ।

छौना कांप रहा था । उसकी आँखें सूसन पर जमी थीं । वह चीख सकता था, पर उसकी हिम्मत नहीं हुई ।

अप्रत्याशित निर्णय के बाद सूसन ने हिरनी की गर्दन थपथपाई ।

उसने उसके सिर को अपने से चिपकने से बचने के लिए एक ओर कर दिया, पर हिरिनी भागी नहीं।'

सूसन ने मुड़कर मेरी ओर देखा।

बोली—देखा तुमने !

कुछ क्षणों तक मैं खड़ा-खड़ा यह महान् दृश्य देखता रहा—हेमंती सूरज की किरणों में बरफ के ऊपर थिरकती एक लड़की। और अब मुझे ऐसा लगा कि यह वह दृश्य है जब कि उत्कंठा लालसा और विश्वास के पंख जीवन की नयी प्रेरणा और संदेश देते हैं। सिर्फ मूर्खता-पूर्ण चकाचौंध ही नहीं—और यही हैं वे क्षण, जब ध्वनि अजनबी नहीं रहती—आत्मीय संगीत बन जाती है।

क्योंकि मुझे लगा कि इस चटकीले हेमंती दृश्य में मैं बिलकुल अजनबी हूँ—अजनबी—एक अजनबी समझ का इंसान !

मैं बोला—तुम अपने इस करतब पर गर्व से इतरा रही हो, है न ? पर तुम तो ऐसे करतबों की माहिर हो। तुमसा अच्छा यह ढब कोई नहीं जानता कि किसी को कैसे नम्रता, अत्यन्त नम्रता से झुकाया जाय। लेकिन फिर ? इसके बाद क्या होगा। हम कुछ क्षणों में यहाँ से चले जायेंगे और यह हिरनी जिसे तुमने तरंग से छल लिया है, यहीं ठगी-सी खड़ी रह जायगी। यहीं खड़ी रह जायगी, इस विश्वास के साथ कि सब इंसान तुम्हारी ही तरह नम्र और प्यारे होते हैं। क्या तुम जानती हो, इस सड़क पर कैसे-कैसे लोग गुजरते हैं ? पास के गांव के लोग, वह तुम्हारी इस हिरणी को पकड़ कर इसकी खाल उतार लेंगे। और इसकी जिम्मेदारी तुम पर होगी। तुम पर, जिसने आज उसे यह सिखा दिया है कि पकड़े जाने की परवाह मत करो। क्या तुमने इसके बारे में भी सोचा ?

फिर तुम क्या चाहते हो, मैं क्या करूं ? सूसन ने पूछा। 'हिरणी' को सिखा दो कि इन्सान कैसे होते हैं। अपनी बंदूक का कुँदा इसके पुट्ठे

पर मारो। खूब जोर से मारो, ताकि यह कभी भूल न सके। उसे यह सबक पढ़ाना ही पड़ेगा, उसे यह सबक आना ही चाहिए ?

सूसन ने कहा—क्या सचमुच ? तुम गंम्भीरता पूर्वक यह बात कह रहे हो ?

अब उसकी आवाज में वह तरलता न थी और जादू भी नहीं। भारी और गंभीर आवाज थी मैं उसकी इस आवाज से कितना परिचित था, गंभीर आवाज और गहरी भारी पलकें।

'चोर बाजार में हिरिणी का माँस बहुत तेज बिकता है और फिर खाल की भी खासी कीमत मिलती है।

इसके आगे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं थी।

और उसने अपनी बंदूक उठाई और उसका कुँडा हिरणी के पुट्ठों पर धमाके से दे मारा।

हिरणी और उसका छौना तावड़तोड़ भाग गये।

और हम दोनों जहाँ थे, वहीं खड़े रहे।

इटैलियन कहानी
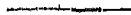
इन्सान का दिल

यीओरयीएरी कोंत्री

बाहर बैठे यिओवानी ने घंटी का स्वर सुना। इसके साथ ही उसे किसी के अन्दर हाल में प्रवेश करने की आहट भी मिली। पर वह अपने स्थान पर वैसा ही बैठा रहा। उसने सोचा यह कौन हो सकता है? कैमिस्ट का नौकर, पंसारी अथवा अपनी नौकरानी? उसके मानस पटल पर अतीत के चलचित्र खिंचने लगे। उसका जीवन ऐसे मधुर स्वप्नों की एक कहानी है। जो कभी के भंग हो चुके हैं। उसकी कल्पनाओं ने जिन मधुर स्वप्नों का निर्माण किया था, वह मिट्टी में मिल चुके हैं, परन्तु अब किया भी क्या जा सकता है।

वह सोचने लगा कि अभी दाई आती होगी और उसके बाद डाक्टर साहब तशरीफ ले आयेंगे, और कुछ ही समय में काम खत्म हो जायेगा।

मधुमास की जवानी शिखर पर थी। फूलों में एक नया उल्लास नई उमंग और नई चेतना थी। लेकिन उसका मन कहीं और था, वह इस पर ध्यान नहीं दे रहा था। मन बहलाने को वह एक पुस्तक के पृष्ठ उलटने लगा। उसने पच्चीस वर्ष की आयु में शादी की थी। अब वह तीस का है। उसकी इच्छा विवाह करने की न थी। लेकिन वह अपनी माँ को अप्रसन्न नहीं देखना चाहता था। अतः उसने ईरेने के साथ विवाह कर लिया। यिओवानी की बुआ सम्पन्न थी। उनके कोई लड़का न था, केवल एक लड़की थी, जिसका नाम था आन्ना। बचपन से ही वह उनके यहाँ आया-जाया करता था। लेकिन जब उसने जवानी के आँगन में

पैर रखा, तो उसकी बुआ ने उसका आना-जाना पसंद न किया। कैसे पसंद करती। उनकी अपनी तुलना में यिओवानी के पास क्या था।

उसकी मां ने उसे समझाया—'बेटा आन्ना को पाना सरल नहीं है। हमारी उनकी क्या बराबरी।' और उसने जब अपनी स्थिति का निरीक्षण किया, एक निष्पक्ष आलोचक की भाँति, तब उसका वह स्वप्न टूट गया और वह कल्पना के गगन से यथार्थ की धरती पर आ गया। उसके हृदय में एक ऐसा घाव हो गया, जो भर न सका।

ईरेने की गर्भावस्था में वह सोचता था कि उसके एक सुन्दर पुत्र होगा—और ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये, उसका मन उल्लास और उमंग से भरता गया। वह विचारों में मग्न उठा और उस कमरे के बाहर आकर ठहर गया। जिसमें ईरेने प्रसव-पीड़ा से कराह रही थी।

वह अपने विचारों में मग्न था कि किसी ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया। वह सकपका गया।

उसने पूछा—'कुशल तो है ?'

डाक्टर ने कहा—'आप इतने घबराते क्यों हैं। सब ठीक हो जायगा अभी आध घंटे में आप किसी के डैडी बन जायेंगे।

अतीत के चित्रों में वह फिर खो गया। शादी के बाद कई बार उसकी आन्ना से भेंट हुई थी। आन्ना अभी तक अविवाहित थी। कारण पूछने पर उसने बताया था कि वह अपनी स्वतन्त्रता किसी को बेचने को तैयार नहीं। उसकी उम्र अट्ठाईस वर्ष की होने जा रही थी, लेकिन वह उतनी ही रूपवती थी, जितनी आज से दस वर्ष पूर्व। उसमें कोई अन्तर नहीं आया था। आन्ना प्रायः ही आया जाया करती थी और ईरेने से उसने मित्रता कर ली थी। वह यियोवानी से अधिक बात तो नहीं करती थी। केवल उसका हाथ अपने हाथ में लेकर धीरे से दबा देती थी। वह इन्हीं विचारों में डूबा था कि किसी ने हाल में प्रवेश किया, और नौकरानी से बात करने लगा। उसने देखा कि एक स्वर्ण-केशी उसकी ओर आ रही है।

अरे यह तो आन्ना है। आन्ना ने उसके पास आ कर पूछा—'ईरेने कैसी हैं ?'

यिओवानी सकपका गया। कुछ उत्तर न दे सका। आन्ना ने उसकी ओर देखते हुए पूछा—'यिओ, आज मैं तुम्हें उदास देख रही हूँ।'

उसने अनमने भाव से उत्तर दिया—'कोई खास बात नहीं, यों ही।'

और उसकी दृष्टि आन्ना के सुन्दर, सुगठित शरीर पर जाकर अटक गई। कितनी सुन्दर है आन्ना, काश······उसने सोचा किन्तु बोला—'बैठ जाओ आन्ना। तुमने ऐसे समय में आकर मुझ पर बड़ी कृपा की है।'

आना ने उसके बदले हुए स्वर को महसूस किया। वह कुछ क्षण चुप रही, बाद में बोली—'तुम्हें किसी वस्तु की आवश्यकता हो यिओ, तो कहने में संकोच न करना।'

यिओ फिर भी चुप रहा।

दोनों ही अतीत की मधुर-स्मृतियों में खोये रहे अचानक ही यिओवानी ने एक ऐसा प्रश्न किया; जो उस जैसे लज्जालु के लिए नया था।

वह बोला—'तुम कितनी अच्छी हो आन्ना, तुमने अभी तक शादी क्यों नहीं की।'

लज्जा से उसके गाल लाल हो गये। यिओ को ऐसा लगा कि जैसे उसने उसके मर्म पर कोई आघात किया हो। अपने नेत्रों की सजलता को छिपाने की चेष्टा करती हुई वह मुस्कराने की मुद्रा में बोली—मुझे तो अभी तक कोई ऐसा न मिला, जिसने प्रेम-प्रदर्शन किया हो।'

'ऐसे तो कई युवक थे, जो तुम्हें अपनाने के लिए लालायित थे।'

'तुमसे यह किसने कहा ?' आन्ना ने पूछा।

'बुआ ने।'

'उन्होंने झूठ कहा है। यही समझ लो कि मैंने शादी न करने की प्रतिज्ञा कर ली है।

'परन्तु बचपन में जब हम-तुम खेला करते थे, तब तो तुमने इस प्रकार का विचार व्यक्त नहीं किया था।'

'मनुष्य के विचारों में परिवर्तन तो होता ही रहता है।'

'परन्तु तुम्हारे विचारों में यह परिवर्तन कब हुआ ?'

'यही कोई पाँच वर्ष हुए होंगे।'

यिओ ने कहा—इसके मानी यह हुए कि जब हमारी शादी हुई थी।'

आन्ना सकपका गई। वह शायद इसके लिए तैयार नहीं थी। उसने आवेश में अपना होंठ इतने जोर से काटा कि उसमें रुधिर छलछलाने लगा। उसकी मुद्रा से व्याकुलता के भाव दिखाई देने लगे। उसने अपने को सम्भाला और उठते-उठते बोली—"अच्छा नमस्कार। फिर आऊँगी। यदि आवश्यकता पड़े तो कहने में या बुलाने में संकोच न करना।'

'वाह, जरूरत होगी, तो क्या बुलाऊँगा नहीं। अच्छा, तो क्या आज बिना हाथ मिलाये ही चली जाओगी ?'

'यह लो' कहकर आन्ना ने अपना हाथ बढ़ा दिया।

यिओवानी ने उसके हाथ को पकड़ कर दबाया। उसने महसूस किया कि आन्ना का हाथ कांप रहा है। उसने और भी वेग से दबाया। दोनों कुछ क्षण मन्त्रमुग्ध से रहे।

आन्ना के जाने के बाद उसे ऐसा लगा कि उसके जीवन का समस्त रस सूख गया हो। वह सोचने लगा कि उसने कितनी बड़ी गलती की। उसने आन्ना जैसे रत्न को अपने हाथों से ठुकरा दिया। उसे याद आया, जब वह आन्ना से मिलने के लिए जाया करता था, तो उसका मुख पुष्प के समान खिल जाता था। जब वह दो-एक दिन नहीं पहुँचता तो वह दुखी हो जाया करती थी।

लेकिन आन्ना ने उससे कहा क्यों नहीं। उसके स्वाभिमान को गहरी ठेस लगी होगी।

और उसका वह कांपता हुआ हाथ। आन्ना के हृदय में अब भी

उसके लिए प्रेम है। वह इन्हीं विचारों में उलझा था कि एक चीख ने उसके विचारों की धारा बदल दी।

'यिश्रोवानी!' डाक्टर ने उसके पास आकर घबराहट भरी आवाज में कहा।

यिओ बोला—'कहिए, कुशल तो है।'

डाक्टर बोला—हाँ, कुशल तो है। लेकिन बच्चे की मां खतरे में है। दोनों में केवल एक को ही बचाया जा सकता है। बच्चे को या उसकी मां को।'

यिश्रो पागल की तरह चीख उठा—'क्या कहा डाक्टर।'

डाक्टर ने कहा—'बात कुछ ऐसी ही है। दोनों में से केवल एक को ही बचाया जा सकता है। विज्ञान इससे अधिक और कोई सहायता करने में असमर्थ है।

यिओ के सामने एक नया ही चित्र उभर आया। पुत्र और आन्ना। यदि ईरेने मर जाय तो वह बिना किसी विघ्न-बाधा के आन्ना से विवाह कर सकेगा। केवल उसे जरा सा कहने भर की देर है। वह बेसुध सा चीख उठा—क्या तुम अपनी पत्नी से प्रेम नहीं करते। क्या तुम अपनी जिन्दगी एक ऐसी स्त्री के साथ निबाह रहे हो, जो तुम्हारे योग्य नहीं है। जो रत्न तुमने एक बार अपनी नासमझी से खो दिया है उसे क्या दुबारा फिर ठुकरा दोगे। ऐसी गलती मत करो। कह दे। मूर्ख मत बन। केवल तुझे दो शब्द कहने हैं। कह दे—बच्चा।

यिश्रोवानी ने बड़े कष्ट से अपना सिर थोड़ा सा उठाया और कहा—'डाक्टर माता को बचाओ।'

अमेरिकन कहानी

मेजर

अर्नेस्ट हेमिंग्वे

बर्फ पड़ रही थी और बाहर की खिड़की पर बहुत ऊंचे तक जम गई थी। सूरज अभी काफी ऊँचा था। उसकी किरणें बर्फ के टीलों से टकरा कर केबिन के अंदर आ रही थीं। मानचित्र जो दीवार पर टंगा था, किरणों के स्पर्श से चमक रहा था। केबिन के बाहर खुले हिस्से में खाई खुदी थी और जब धूप तेजी पकड़ती, बर्फ पिघलती और उससे खाई ज्यादा चौड़ी हो जाती थी।

मार्च का अंतिम सप्ताह था। मेजर केबिन में बैठा, फायलों में उलझा हुआ था। उसी के पास उसका एडजुटेण्ट बैठा हुआ कागजों को फाइल कर रहा था। मेजर की आंखों के चारों ओर गोलाई लिये हुए सफेद निशान बन गये थे। यह निशान उस चश्मे से बन गये थे, जिसे धूप की चकाचौंध से आँखों की सुरक्षा के लिए मेजर इस्तेमाल करता था। धूप में रहने के कारण मेजर का चेहरा भी गहरे भूरे रंग का हो गया था। उसकी नाक पर कुछ सूजन सी थी। चमड़ी फटने के कारण झुर्रियाँ भी पड़ गई थीं।

बीच बीच में मेजर कटोरी में रखे हुए तेल को बायें हाथ की उंगली से लेकर चेहरे पर चुपड़ लेता था। अपने माथे और गालों पर उंगली फेरने के बाद, अपनी नाक पर भी वह उंगली फेर लेता था।

काम खतम करके मेजर अपने सोने के कमरे में चला गया। जाते

हुए उसने एडजुटेण्ट से कहा—मैं कुछ देर आराम करूंगा, तब तक तुम अपना काम निबटा लो

+ + +

मेजर के अन्दर जाते ही एडजूटेण्ट ने पाइप सुलगाया, और जेब से एक उपन्यास निकाल कर पढ़ने लगा। लेकिन जब उसे अपने काम का ध्यान आया, तब किताब बंद कर दी और काम में जुट गया।

सूरज की तेजी लगभग खतम हो गई थी। धीमे-धीमा प्रकाश केबिन के अन्दर आ रहा था।

केबिन का द्वार खोल कर एक सैनिक अन्दर आया। यह सैनिक मेजर का अर्दली पिनी था। उसने अपने हाथ की लकड़ियां अंगीठी में डाल दीं।

एडजुटेण्ट ने कहा—क्या करते हो, धीरे से डालो। मेजर साहब सो रहे हैं।

पिनी ने अँगीठी में और लकड़ियाँ डाल दीं और फिर केबिन के बाहर चला गया।

+ + +

मेजर ने एडजुटेण्ट को बुलाया और उससे पिनी को भेज देने के लिए कहा। उसने पिनी को बाहर से बुला कर मेजर के कमरे में भेज दिया।

पिनी अभी नई उम्र का ही था। उसका रंग भी कुछ काला था।

पिनी ने जब कमरे में प्रवेश किया तो मेजर ने कहा—किवाड़ बंद करके इधर आ जाओ।

मेजर ने पूछा—तुम्हारी आयु इस समय क्या है ?

पिनी ने उत्तर दिया—उन्नीस वर्ष, जनाब।

मेजर ने पूछा—क्या तुमने कभी किसी को प्यार किया है ?

पिनी ने कहा—मैं जनाब के प्रश्न का मतलब अभी तक नहीं समझ सका ।

'क्या तुमने कभी किसी जवान लड़की से मुहब्बत की है ? मेजर ने पूछा ।

'कई लड़कियों से मेरी दोस्ती रही है ! पिनी ने उत्तर दिया ।

'मैं यह नहीं पूछ रहा हूँ—मेरा तो कहने का मतलब यह है कि क्या तुमने किसी लड़की को प्यार किया है ?

'किया है, जनाब !

'लेकिन फिर भी तुमने कभी उसे कोई प्रेम पत्र नहीं लिखा ।

'नहीं लिखा जनाब ।

'क्या यह सच है ?'

'सच है जनाब !'

'तो तुम विश्वासपूर्वक कह सकते हो कि तुम्हें उस लड़की से सच्ची मुहब्बत है ।

'हां' मुझे इसका पूरा विश्वास है ।

'क्या तुम यह भी कह सकते हो कि तुम बदचलन नहीं हो ।

'जनाब, मैं यह नहीं समझता कि बदचलनी का मतलब क्या है ।'

'ठीक है' तो अब तुम्हें सेना में नौकरी करने की आवश्यकता नहीं है ।

पिनी की दृष्टी नीची हो गई ।

मेजर ने एक बार उसे ऊपर से से देखा और कहा—सेना में ऊंचा पद प्राप्त करना । तुम्हारी महत्वकांक्षा की सूची में नहीं है ।

मेजर को बड़ा संतोष हुआ । वह थोड़ी देर चुप रहा और उसके बाद बोला—तुम बड़े अच्छे लड़के हो पिनी ! संसार में बुरे लोग अधिक

हैं, तुम्हें उनसे बच कर रहना चाहिए, सेना में ऊँचा पद पाने का प्रयत्न भी मत करो। डरने की कोई बात नहीं। तुम्हें मुझ से कोई नुकसान नहीं होगा। तुम हमारे अरदली का ही काम करो, यहाँ तुम्हें कोई असुविधा नहीं होगी।

अब तुम जाओ।

पिनी दरवाजा खोल कर बाहर निकल आया। एडजुटेण्ट उसकी लड़खड़ाती चाल और उत्तेजना देखकर मुस्कराने लगा।

मेजर अपने कमरे में पड़ा सोच रहा था पिनी कहीं मुझसे झूठ तो नहीं बोल रहा है

रूसी कहानी

कौन था

एन्टह् पावलोविच चेखव

प्रोफेसर अखिन्येव ने अपनी पुत्री नटाल्या की शादी प्रोफेसर इवन पिट्रोविच के साथ कर दी। विवाह-भोजन तरंग पर था। बैठक से नाच-गाना, हंसी-मजाक के स्वर उठ रहे थे। बैरे काले कोट और सफेद नेकटाई लगाये इधर-से-उधर दौड़ रहे थे। पड़ोस के लोग जिन्हें निमन्त्रण नहीं मिला था, खिड़कियों से ताक-झाँक रहे थे।

रात आधी बीत चुकी थी। पाकशाला धुँवे से भरी हुई थी। विभिन्न प्रकार की गंध धुँवे में मिलकर आ रही थी। भोजन और शराब की मेजें अटी पड़ी थीं। पाकशाला की अध्यक्षा श्रीमती मफी अपने कार्य में अत्यन्त व्यस्त थी। अखिन्येव ने पाकशाला में पहुँच कर कहा—मछली की गंध मुझे यहाँ तक खींच लाई, जरा दिखाना तो। मैं चाहूँ तो अभी सारी रसोई चट कर सकता हूँ।

मफी ने एक चिकना कागज लेकर उसमें मछली रखकर दी। अखिन्येव ने मछली देखकर संतोष की साँस ली। उसने चटखारे लेते हुए मछली खाई। फिर उठकर आनंद से उँगलियाँ चटखाईं और होठों से स्वाद लेने का स्वर निकाला।

बगल के कमरे से सहयोगी प्रोफेसर बेकन ने अपना सिर निकाला और कहा—वाह, हार्दिक चुम्बन। मफूसा तुम किसका चुम्बन ले रही हो।

बेकन बाहर आया, बोला—वाह अखिन्येव, वाह, बहुत अच्छे।

मेरा बूढ़ा शेर नारी के साथ गुप्त वार्ता का आनंद ले रहा है ।

घबराये हुए स्वर में अखिन्येव ने कहा—यह तुमसे किसने कहा कि मैं चुम्बन ले रहा था मैं तो आनद के वशीभूत मछली को देखकर होंठों से स्वाद लेने का स्वर कर रहा था ।

किसी और को मूर्ख बना ा मुझे नहीं—मुस्कराते हुए बेकन ने कहा और द्वार से पीछे निकल गया ।

अखिन्येव का मुँह लज्जा से लाल हो उठा ।

उसने सोचा अब यह नगर भर में हर जगह कहता फिरेगा । पता नहीं इसका क्या परिणाम होगा ।

अखिन्येव ने डरते और झिझकते हुए बैठक में प्रवेश किया । उसने देखा कि बेकन पियानो के समीप बैठी इन्स्पेक्टर की साली से कुछ कह फुसफुसा रहा था और वह मंद-मंद मुस्करा रही थी ।

अखिन्येव ने सोचा—यह दुष्ट मेरे ही बारे में कह रहा है और वह विश्वास कर रही है । हे ईश्वर इस बात को मुझे यों ही नहीं छोड़ देना चाहिए । नहीं तो अनर्थ हो जायगा । मुझे इस बात को इस प्रकार रखना चाहिए कि कोई इस पर विश्वास न करे । मैं सबसे बात करूँगा और इस प्रकार उसकी गप्प बेकार साबित हो जायेगी ।

अखिन्येव ने अपना सिर खुजाया और वह डरता हुआ पडेकोग्राइ के पास पहुँचा ।

उसने बुलंद आवाज में कहा—अभी कुछ देर पहले मैं पाकशाला में भोजन की व्यवस्था कर रहा था मैं जानता हूँ तुम्हें मछली बहुत पसंद है और मेरे पास एक दो गज की लम्बी मछली है और हाँ, मैं भूल ही गया था—पाकशाला में उस मछली की एक घटना घट गई । मैं जब पाकशाला में घुसा, बड़ी मछली को देख कर खुशी के आनंद में होंठो से स्वाद लेने का स्वर किया । इसी समय वहाँ मुर्ख बेकन ने प्रवेश किया और कहने लगा—तुम यहां चुम्बन ले रहे हो, मफी का । तनिक सोचिए

मूर्ख ने क्या आविष्कार किया है । वह स्त्री कुरूप है—और यह कहता कि हम चुम्बन में व्यस्त थे । कितना विचित्र व्यक्ति हैं ।

'विचित्र व्यक्ति कौन है ? तारन लोव ने पूछा ।

मैं बेकन के बारे में बता रहा था । मैं पाकशाला में गया……

और उसने पूरी कहानी फिर दुहरा दी ।

मुझे तो हँसी आती है । वह कितना छोटा आदमी है । मेरे विचार में मफी के चुम्बन से मैं कुत्ते का चुम्बन लेना अधिक पसंद करूंगा । अखिन्येव ने बात बढ़ाई और घूमते ही उसकी दृष्टि मजदा पर पड़ी ।

हम लोग बेकन के विषय में बातें कर रहे थे । कितना विचित्र प्राणी है । उसने पाकशाला में मुझे मफी के पास खड़ा देख कर एक कहानी का आविष्कार कर लिया ।

क्या ? एक ने पूछा ।

वह बोला—हम एक-दूसरे का चुम्बन ले रहे थे । वह पिये था और निश्चय ही अर्द्धचेतन था । और मैं…… ? मैंने कहा—मैं मफी की अपेक्षा एक गधी का चुम्बन लेना ठीक समझूँगा । मेरे एक पत्नी है—मूर्ख ने क्या बात बनाई है । उसने मुझे हँसी का पात्र बना दिया ।

किसने बना दिया ? एक प्रोफेसर ने पूछा ।

बेकन ने । तुम जानो मैं पाकशाला में खड़ा था…… और पूरी कहानी फिर सुना दी ।

थोड़ी ही देर में सबको कहानी मालुम हो गई ।

अखिन्येव ने हाथ रगड़ते हुए सोचा—अब उसे कहने दो ।

अब उसकी बात का क्या असर पड़ेगा ।

अखिन्येव आत्मसंतोष में इतना डूब गया कि उसने शराब के कई पैग पी लिये । अपनी पुत्री को उसके कमरे में पहुँचा कर वह अपने कमरे में जाकर सो गया । मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ ।

एक सप्ताह के बाद जब वह क्लास रूम से निकल कर विश्राम

कक्ष में था। उसे प्रिंसिपल ने बुलाया और कहा—देखिये जनाब, मैं यह साफ कर देना चाहता हूँ कि मेरा आपके व्यक्तिगत जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं है। आपकी चाहे भोजन पकाने वाली से घनिष्ठा हो या किसी और से। आप उसके चुम्बन लें, या और कुछ करें। पर केवल इतना कहना है कि आप जो भी करें, इस प्रकार सबके सामने नहीं। क्योंकि आप एक शिक्षक हैं और आपकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

अखिन्येव जड़ हो गया। उसे सूझा नहीं कि वह क्या उत्तर दे। वह हतबुद्धि सा घर गया। उसे क्या पता कि घर पर और भी विपत्तियाँ उसका स्वागत करने को तैयार हैं।

अखिन्येव से पत्नी ने भोजन के समय प्रश्न किया—तुम कुछ खाते क्यों नहीं। क्या मर्फी के ध्यान में डूबे हो? मुझे सब पता चल गया है। भले आदमियों ने मुझे सब बता दिया है।

अखिन्येव गुस्से से उठा और एक चपत उसने अपनी पत्नी के गाल पर मारी और बिना हैट तथा कोट के बेकन के घर में घुस गया।

बेकन से उसने कहा—क्यों रे धूर्त, संसार के सामने तू क्यों मुझे अपमानित कर रहा है। तू ने हरएक से कहा कि मैं मर्फी का चुम्बन ले रहा था।

बेकन ने शाँत भाव से अपनी दृष्टि मूर्ति की ओर उठाई और बोला—यदि मैंने तुम्हारे विरुद्ध एक भी शब्द कहा हो तो, मेरी आँखें फूट जायें। मेरा सर्वस्व नष्ट हो जाय।

बेकन पर अविश्वास न कर सका अखिन्येव का का मन।

अब वह सोचने लगा कि ऐसा कौन व्यक्ति था, जिसने उसे बदनाम किया। सभी परिचितों के चेहरे एक-एक कर उसके सामने आ रहे थे, पर वह निर्णय नहीं कर पा रहा था कि किसने कहा।

रूसी कहानी

दीपदान

एण्टन चेखव

अखबार के अंदर कोई वस्तु लपेटे हुए सशा ने डाक्टर कोशलेव के कार्यालय में प्रवेश किया।

अभिवादन के पश्चात् डाक्टर ने पूछा—'कोई नई बात? कुशल-मंगल तो है।'

'मेरी माता ने कृतज्ञता ज्ञापन के लिए आपके पास मुझे भेजा है। आपने मेरी भयानक बीमारी में जिस लगन से उपचार करके मुझे प्राण-दान दिया है, उसके लिए हम दोनों शब्दों द्वारा कृतज्ञता प्रगट करने में अपने को असमर्थ पाते हैं।'

डाक्टर ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा—'मैंने तो अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। मेरे स्थान पर और भी कोई होता, तो वह भी यही करता।

सशा ने फिर कहा—'मैं अपनी मां का इकलौता बेटा हूँ, और हम लोग निर्धन भी हैं। आपकी इस सेवा के बदले में आपको कुछ दे सकने में असमर्थ हैं। हम लोगों को इस बात का दुःख है। इसी कारण हम लोगों के मन को शान्ति नहीं मिल रही है। हम आपसे अत्यन्त विनम्रता-पूर्वक प्रार्थना करते हैं कि अपने प्रति हमारी श्रद्धा, कृतज्ञता और आदर के रूप में आप इस उपहार को स्वीकार कर लीजिये। प्राचीन काँसे का बना हुआ शिल्प का यह श्रेष्ठतम नमूना है।

डाक्टर ने कहा—'इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।'

सशा ने अत्यन्त आग्रह से कहा—'इसे आप कृपा करके स्वीकार कर लीजिये, यदि आपने इसे अस्वीकर कर दिया, तो मुझे और मेरी माँ को हार्दिक क्लेश होगा। इसे हम लोगों ने अभी तक अपने स्वर्गीय पिता की स्मृतिस्वरूप रखा था। मेरे पिता पुरानी मूर्तियों के व्यापारी थे। हम लोग भी आजकल यही व्यापार करते हैं।'

सशा ने उस वस्तु को शाँति से आवरण हटाकर मेज पर रख दिया। वह कांसे का एक छोटा-सा दीपदान था। वह वास्तव में ऊंचे दर्जे की कला थी। उस पर चित्र बने थे–दो स्त्रियों के, जिनके हाथों में जलाकर मोमबत्तियाँ संभलवाई जातीं। मूर्तियां सजीव और आकर्षक थीं।

डाक्टर ने कहा—'इसमें संदेह नहीं कि यह कला का उत्कृष्ट नमूना है। लेकिन मेरे विचार से इसमें उचित-अनुचित का ध्यान नहीं रखा गया है। इसे कम से कम आधी पोशाक तो पहनाई ही जानी चाहिए थी।'

'मैं समझा नहीं कि आपका संकेत किस ओर है?' सशा ने पूछा।

'मेरा मतलब है कि क्या कोई कलाकार इससे भी अधिक अश्लीलता का प्रदर्शन कर सकता है। इस प्रकार की वस्तु को मेज पर रखना मकान की पवित्रता को भ्रष्ट करना है।

'शिल्प के प्रति आपका विचार अनोखा है डाक्टर साहब!' सशा ने कुछ नाराजगी के स्वर में कहा—'जरा इसे गौर से देखिएगा, इसमें कितनी सुन्दरता और आकर्षणता है। इसे देख कर मन में भक्ति-भावना हिलोरें लेने लगती है। आँखों में आंसू उमड़ आते हैं।'

'मैं इस बात को समझता हूँ। पर मैं बाल-बच्चे वाला आदमी हूँ। स्त्रियाँ भी यहां आती हैं। वे इसे देखकर मेरे बारे में क्या धारणा बनायेंगी।

'कला के दृष्टिकोण से यह शिल्प का उत्कृष्ट नमूना है। आपको तो डाक्टर साहब, जन साधारण के दृष्टिकोण से ऊपर उठकर देखना

चाहिए। यदि आप इसे नहीं लेंगे, तो मेरी माँ को बड़ा क्लेश होगा। हमारे पास इस समय इससे बहुमूल्य दूसरी वस्तु नहीं है। मुझे इस बात का दुःख है कि मेरे पास इस दीपदान का जोड़ा नहीं है।'

'धन्यवाद मेरे बच्चे।' अपनी माँ से मेरा नमस्कार कहना। मैं तुम्हारी भावना का आदर करता हूँ। मेरे पास इलाज के लिए स्त्रियाँ और बच्चे आते रहते हैं। इसलिए मैं इसे यहाँ नहीं रखना चाहता। परन्तु···खैर, इसे उस गुलदस्ते के पास रख दीजिये।'

सशा ने उसे गुलदस्ते के पास रख दिया और बोला—'इसका जोड़ा होता, तो इसकी शोभा और ही होती। खैर, अच्छा नमस्कार।'

\+ \+ \+

सशा के जाने के बाद डाक्टर दीपदान के बारे में ही सोचता रहा।'

इसमें शक नहीं कि यह कला का श्रेष्ठ नमूना है। इसको फेंक देना तो अनुचित होगा। पर इसे यहां रखना भी उचित प्रतीत नहीं होता। हां, यह हो सकता है कि इसे किसी को उपहार स्वरूप दे दिया जाय। अब सोचना यह है कि इसे किसको दिया जाय। विचार करते-करते डाक्टर को अपने वकील मित्र ओखब का ख्याल आ गया। डाक्टर का एक मुकदमा भी उन्होंने बिना फीस लिए लड़ा था। बस यही ठीक है। उन्हीं को इसे भेंट कर देना चाहिए।

ओखब ने न तो उस समय फीस ली थी और न वह लेगा ही। यही ठीक है। अभी उसकी शादी भी हुई है और वह है भी चंचल स्वभाव का। इसलिए यह उसे भेंट कर दिया जाय। यह विचार करके वह दीपदान लेकर ओखब के घर चल पड़ा।

\+ \+ \+

ओखब उसे घर पर ही मिल गया।

डाक्टर ने कहा—भाई, तुम फीस के रुपये तो स्वीकार करते नहीं हो आज मैं तुम्हें शिल्प का एक उत्कृष्ट और बहुमूल्य उपहार देने आया है। इसे स्वीकार करो।

वकील दीपदान को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसकी कला की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगा।

मन भर कर प्रशंसा करने के बाद बोला—मित्र, मैं इसे स्वीकार करने में अपने को असमर्थ पाता हूँ। तुम इसे अपने साथ ही लेते जाओ।

डाक्टर ने घबराकर पूछा—ऐसी क्या बात है ?

बात यह है कि कभी-कभी मेरी माँ मुझसे यहां मिलने आया करती हैं। मुवक्किल भी यहां आते हैं।

डाक्टर ने कहा—यह नहीं हो सकता कि तुम इसे अस्वीकार कर दो। मैं इस बारे में तुम्हारी एक न सुनूँगा। देखो तो सही इसमें कितना आकर्षण है।

इतना कह कर डाक्टर मकान के बाहर निकल आया।

डाक्टर के जाने के बाद ओखब ने उसे गौर से देखा, स्पर्श किया और सोचने लगा, उपहार तो वास्तव में अद्वितीय और बहुमूल्य है। लेकिन इसे घर में रखना भी ठीक नहीं है। इसे आज अपने मित्र शिशकन को भेंट कर दूँगा। वह हास्यरस का विख्यात नाटककार है और इस प्रकार की चीजों को पसन्द भी करता हैं।

ओखब नें उसी दिन शाम को इसे ले जाकर शिशकन को भेंट कर दिया। वहां बैठे हुए सब लोग उपहार की प्रशंसा करने लगे।

सबके जाने के बाद शिशकन सोचने लगा कि मैं इसका क्या करूँ। मैं यहां एक परिवार के साथ रहता हूँ। उनके स्त्री हैं, बच्चे हैं। फिर मेरे नाटक की अभिनेत्रियाँ और सम्भ्रान्त महिलाएं भी मुझसे भेंट करने आती हैं। इसे दराज में बन्द करके भी नहीं रखा जा सकता।

इसी समय उसके एक साथी ने उसकी कठिनाई को हल करते हुए कहा—यहां प्राचीन मूर्तियों का व्यवसाय करने वाली एक स्त्री है। उसके पास मैं इसे बेच आऊँगा।

+ + ×

दो दिन बाद—

डाक्टर कोललेव अपने दफ्तर में बैठे हुए किसी गम्भीर समस्या पर विचार कर रहे थे कि सहसा तेज़ी से द्वार खोलकर हाँफते हुए सशा ने प्रवेश किया। मस्तक से पसीने की बूँदें पोंछते हुए सशा ने कहा—आज आप मेरी प्रसन्नता का अनुमान नहीं कर सकते। आपके सौभाग्य से हमें दीपदान का जोड़ा मिल गया है। माँ को इससे अपार प्रसन्नता हुई है। मैं अपनी माँ का इकलौता पुत्र हूँ। आपने मुझे जीवनदान दिया है।

इतना कह कर उसने अखबार में लपेटा हुआ दीपदान मेज पर रख दिया।

जब तक डाक्टर कुछ कहने के लिए मुँह खोले, तब तक सशा दरवाजे के बाहर जा चुका था। मेज पर वह उपहार रखा था और डाक्टर अवाक् कभी उस उपहार की ओर और कभी दरवाजे की ओर देख लेता था।

आँसुओं की बाढ़

कैथेराइन मैंसफील्ड

एक बूढ़ी स्त्री एक लेखक के यहाँ सफाई का कार्य करती थी——सप्ताह में केवल एक दिन। उसी बूढ़ी का नाम था पार्कर।

बूढ़ी पार्कर रसोई की सफाई करने के लिए पहुँची। अभी दो ही दिन पहले उसके दोहते का देहान्त हो गया था। वह रसोई में बैठ गई। उसे याद आया, अभी एक दिन······

उसका प्यारा नन्हा दोहिता कीचड़ में अपने जूतों को साने हुए बाहर से दौड़ता हुआ आया, और नानी की गोद में चढ़ गया।

नानी ने उसे प्यार से डाँटते हुए कहा——दुष्ट, देख तो तूने मेरे कपड़े ख़राब कर दिए।

बच्चे पर इस मीठी झिड़की का कोई असर नहीं पड़ा। वह नानी के गालों से अपने गाल रगड़ने लगा।'

'नानी मुद्दे वो लाना है।'

क्या लाना है।'

'वो बाहल ते, एक पैता दो।'

'मेरे पास कहाँ से आया पैसा।'

'नईं एत दो।'

और उसने नानी के बटुए को पकड़ लिया।

'अच्छा मैं पैसा दूँ तो तू मुझे क्या देगा।

बच्चे ने अपने कोट की जेबें दिखा कर कहा——'मेले पात तो तुत भी नईं ए।'

बूढ़ी पार्कर की तन्द्रा टूटी। रसोईघर बड़ा गन्दा हो रहा था। फर्श पर खाने-पीने का सामान, सिगरेट के टुकड़े आदि अनेक वस्तुएँ बिखरी पड़ी थीं।

उसने सोचा—इस बेचारे लेखक को कितना कष्ट है। कोई भी इसकी देखभाल करने वाला नहीं है।

झाड़ू लगाते हुए बूढ़ी पार्कर सोचने लगी मेरी जिंदगी भी क्या है। आज तक कभी सुख नहीं मिला। जिन्दगी उसने यों ही कराहते हुए काट दी।

वह जब किशोरावस्था में ही थी, तभी गांव छोड़कर शहर में आ गई थी। अब तो उसे गाँव के, अपनी माँ, घर और सामने के पेड़ को छोड़कर और कुछ भी याद नहीं है।

शहर में उसने सबसे पहले जिस परिवार में नौकरी की, वहां उसे बड़ा कष्ट था। उस परिवार की एक बावर्चिन उसे बड़ा सताती थी। यहां तक कि उसकी घर से आई चिट्ठियों को भी उसे पढ़ाये बिना जला देती थी। उस परिवार के बाद उसने एक और जगह नौकरी की।

इसी बीच पार्कर ने ब्याह कर लिया। उसके तेरह संतानें हुईं—सात तो बेचारे दुनिया को अच्छी तरह देखने के पहले ही चल बसे।

छोटे-छोटे छः बच्चों को बिलखता छोड़ कर एक दिन उसका पति भी चल दिया। उसे क्षय रोग हो गया था. और इतनी शक्ति इस परिवार में थी नहीं कि वह कीमती औषधियां इस्तेमाल कर सकता।

पार्कर पर विपत्ति टूट पड़ी। पर उसकी ननद के आ जाने से उसे कुछ ढारस बँधा। पर एक दिन सीढ़ियों से गिर जाने के कारण उसकी रीढ़ की हड्डी टूट गई।

+ + +

बूढ़ी पार्कर की लड़की माडी शहर की रंगीनी में अपने को खो बैठी थी। वह तो गई ही, पर साथ में अपनी छोटी बहिन एलिस को भी ले गई।

दो लड़के न जाने कहां नौकरी करने चले गये। एक लड़का फौज में भरती हो गया।

छोटी लड़की ऐथेल ने होटल के बैरे से शादी कर ली। जिस वर्ष लैनी पैदा हुआ, उसी वर्ष उसका बाप मर गया।

बूढ़ी पार्कर ने फर्श को जगमगा दिया था। प्लेटें और प्याले साफ करके रख दिये थे। वह फिर स्मृतियों में डूब गई।

लैनी को देखकर कोई लड़का नहीं कह सकता था, लड़की लगती थी। दुर्बल भी बहुत था।। उसके सुनहले बाल, नीली आंखें और नाक पर एक ओर तिल था। लैनी को स्वस्थ बनाने के लिए अनेक दवाएँ की गईं, पर वह जैसे का तैसा रहा।

बूढ़ी पार्कर को न लैनी के बिना चैन था, न लैनी को नानी के बिना।

बूढ़ी पार्कर लैनी से पूछती—'तू किस का बेटा है रे!' लैनी उछल कर पार्कर के गले से लिपट जाता और कहता—'नानी ता।'

उसे ध्यान आया कि बच्चे को जीवन के लिए कितना संघर्ष करना पड़ा। जब वह खाँसता, उसका कलेजा मुंह को आ जाता। आंखें लाल हो जातीं, माथे पर पसीना छलछलाने लगता। उसके बाद वह तकिये के सहारे गुमसुम-सा बैठा रहता। न बोलता न हंसता, न किसी बात का जवाब ही देता।

बूढ़ी पार्कर उसके चेहरे पर, बालों पर धीरे-धीरे हाथ फेरती। कहती—'भगवान् मुझे कितना ही दुःख दे लो! लेकिन मेरे इस बच्चे को ठीक कर दो।'

बूढ़ी पार्कर ने चादर खाट पर फेंक दी। बड़े-बड़े दुखों को भी उसने धैर्य से सहा। आंसू नहीं निकलने दिये। छाती छलनी हो गई। पर वह गर्वीली बनी रही। उसे किसी ने रोते नहीं देखा।

लैनी के जाने के बाद उस पर क्या बचा। सब कुछ तो उसका चला

गया । जो कुछ भी उसने अपने अपने जीवन में पाया, सब लुट गया, छिन गया, नष्ट हो गया ।

वह सोचने लगी कि आखिर मेरे ऊपर ही इतने दुःख के पहाड़ क्यों टूटे ? मैंने ऐसा कौनसा पाप किया है, जिसकी वजह से मुझे यह सब झेलना पड़ा ।

और यही सोचते-सोचते वह घर से निकल पड़ी । कहाँ जायगी, किधर जायगी, यह उसने नहीं सोचा । सोचने का न अवकाश ही था और न स्थिति ही । वह तो केवल चली जा रही थी । इस आशा से, शायद चलने से ही उसे कुछ शाँति मिले ।

उसे लगा कि लैनी उसकी बाहों में आ गया है । उसने कहा—'बेटे, आज मैं रोना चाहती हूँ । एक लम्बे अरसे तक । उन तमाम बातों को याद करके जो आज तक मेरे जीवन में घटी हैं । अब अधिक समय तक मैं अपनी छाती में आंसुओं की बाढ़ को सम्भाले नहीं रख सकती । अब तो यह बहेंगे ही ।

लेकिन वह रोये कहां । घर जाकर नहीं रो सकेगी । ऐथेल घबरा उठेगी । लेखक के घर भी नहीं रो सकती । वह अपना घर तो है नहीं । दूसरे के घर जाकर रोने का उसे कोई अधिकार नहीं है ।

फिर वह कहां जाकर रोये, जहां न कोई देखे, न कोई उससे सवाल कर सके, पूछ सके । वह रोना चाहती है । चिल्लाना चाहती है ।

वह चली जा रही थी, कि बर्फीली हवा के तेज झोंके ने उसे कंपा दिया । और बारिश भी होने लगी । वह अपने दिल के आंसुओं की बाढ़ को बाहर न निकाल सकी । दुख को अपने दिल की गहराइयों में ही दफन कर देना पड़ा ।

बच्चे और बूढ़े

आईवान कैन्कर

सोने से पहले रोज रात को वे बच्चे बैठ कर मनोविनोद की बातें किया करते थे। अलाव के चारों ओर घेरा बना कर वे बैठ जाया करते थे और जो कुछ उनके मन में आता, कहते।

यह ठीक है कि उनके मन में जो आता, वह कह डालते। लेकिन वे सदा प्रेम, आशा और उल्लास के ऐसे चित्रों का ही निर्माण करते, जिससे उनका भविष्य प्रकाशपूर्ण हो। उनकी कहानियों का न कोई आदि होता न अंत। शब्दों की उसे ध्वनि मात्र ही समझ लीजिये और वे कुछ अटपटे भी समझे जाते थे। यही नहीं उनका कोई निश्चित रूप भी नहीं होता था। कभी-कभी वे चारों ही बच्चे एक साथ बोल पड़ते थे, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था, कि वे एक-दूसरे की बातों में किसी प्रकार की गड़बड़ी करते हों। वे तो प्रकाश के उस स्वर्गिक सौन्दर्य को देखते थे—जिसका प्रत्येक शब्द सत्य से जगमगाता था। जहाँ प्रत्येक कहानी का अपना अस्तित्व था, वह स्वच्छन्द और सजीव थी और जहाँ प्रत्येक कहानी का अन्त प्रकाशपूर्ण था।

वे सब बच्चे आपस में मिलते-जुलते थे। सबसे छोटा तोंशेक चार वर्ष का था और लोइजका दस वर्ष की। एक दिन शाम को न जाने कहाँ से क्रूर हाथ ने आकर उस स्वर्गिक प्रकाश पुँज को निर्ममता से बुझा दिया और बुढ़ियों, कहानियों, और गाथाओं की सब मृदुल और सुकुमार कल्पनाओं पर भीषण आघात किया। डाक से एक पत्र मिला था, जिसमें लिखा था कि पिता इटली के युद्ध में वीर गति प्राप्त कर गये।

कुछ अज्ञात, तथा अजीब और उनकी समझ से नितांत परे उनके सम्मुख आकर खड़ा हो गया। वह प्रश्न सम्मुख था तो लम्बा-चौड़ा-विकराल, परन्तु उसका न कोई शरीर था और न अवयव। न तो वह जनरवपूर्ण सड़क से आया था और न शांत गिरजे से ही। अलाव के चारों ओर व्याप्त छाया का निवासी भी वह नहीं था, और न उन कहानियों का कोई पात्र ही, जो वहां कही जाती थीं।

वह प्रसन्नतादायक नहीं था, किन्तु दुखदायक भी नहीं, क्योंकि वह मृत था। उसके आँखें नहीं थीं, जिससे मालूम हो सके कि वह कहां से आया है और वाणी के अभाव में शब्दों द्वारा भी कुछ व्यक्त नहीं कर सकता था। उस प्रेतात्मा जैसे अरूप जीव के सम्मुख बुद्धि हीन-सी कुंठित और शर्म से गड़ी हुई निश्चित खड़ी थी। जैसे वह अरूप जीव अन्धेरा, असीम और अथाह समुद्र हो, जिसके तट पर कोई उस पार जाने के लिए मौन और अशक्त-सा सा खड़ा हो।

तोंशेक ने पूछा—वह लौटेंगे कब ?

लोइजका ने क्रोधभरी मुद्रा में उसे झिड़क दिया—अगर उन्हें वीर गति मिली है, तो लौट कर कैसे आ सकते हैं।

सब चुप हो गये, जैसे वे उस अँधेरे असीम अथाह सागर के तट पर आ खड़े हुए हों, जिसके पार उन्हें कुछ सूझता ही न हो।

मैं भी युद्ध में जा रहा हूँ। सात बरस के मैतीशे ने एकाएक कहा। मानो उस ने वस्तुस्थिति को पूरी तौर से समझ लिया हो।

तू तो अभी बच्चा है। चार बरस के तोंशेक ने जिसे अभी जांघिया भी पहनना नहीं आता था, गंभीरतापूर्वक भर्त्सना की।

मिलका सबसे पतली और दुबली थी। वह अपनी माँ के बड़े शाल में इस प्रकार लिपटी बैठी थी कि राह चलते लोगों को एक गठरी ही दिखाई देती थी।

चिरैया की तरह महीन और कोमल स्वर में वह बोल पड़ी—लड़ाई

क्या होती है, बताओ न मैतीशे—लड़ाई की कहानी कहो।

मैतीशे ने समझाया—सुन लड़ाई ऐसी होती है। आदमी लोग एक-दूसरे को चाकू भौंकते हैं। एक-दूसरे को तलवारों से काट डालते हैं। बन्दूकों से गोली मार देते हैं। जितना ही ज्यादा मारो-काटो उतना ही अच्छा होता है। कोई तुमसे कुछ नहीं कह सकता। क्योंकि वैसा तो करना ही पड़ता है, होना ही होता है. इसी को लड़ाई कहते हैं—समझी।

किन्तु मिलका नहीं मानी—नहीं समझी—पर वे एक दूसरे का गला क्यों काटते हैं, क्यों चाकू भौंकते हैं, क्यों गोली मारते हैं ?

अपने राजा के लिए ! मैतीशे ने उत्तर दिया।

और सब चुप हो गये।

उनकी धुँधली आंखों को अपने सम्मुख व्याप्त उस विस्तृत मंद उजाले में गौरव के तेज से ज्योतित कुछ विशाल सा उठता हुआ दिखाई दिया। वे सब के सब निश्चल बैठे हुए थे—न हिलते थे न डुलते थे—साँस भी जैसे डर-डर कर ले रहे हों।

उस दुर्वह मौन के भार को हलका करने के लिए मैतीशे ने अपने विचार फिर एकत्रित किये और बड़ी ही सहूलियत के साथ बोला—मैं भी अपने दुश्मन से लड़ने युद्ध में जा रहा हूँ।

मिलका महीन आवाज में पूछ ही बैठी—दुश्मन क्या होता है, क्या उसके सींग होते हैं।

और नहीं तो क्या ! वरना वह दुश्मन कैसे हो। गम्भीरता से बल्कि कुछ क्रोध की मुद्रा में नोंशेक ने जवाब दिया।

और अब मैतीशे को भी इस सवाल का ठीक-ठीक जवाब मालूम नहीं था। फिर भी धीरे से कुछ सोचकर वह बोला—मेरे खयाल से··· तो नहीं होते।

लोइजका ने कहा—उनके सींग कैसे हो सकते हैं। वे भी हमारी तरह ही आदमी होते हैं। फिर कुछ सोच-विचार कर बोली—उनके

सिर्फ आत्मा नहीं होती ।

फिर एक लम्बी चुप्पी ।

तोंशेक ने चुप्पी तोड़ी, बोला—लेकिन आदमी लड़ाई में काम कैसे आ सकता है ।

यानी वे उसे जान से मार डालते हैं । मैतीशे ने सहूलियत के साथ समझाया ।

पापा ने तो मुझ से बंदूक लाने का वायदा किया था ।

अगर वे मर गये हैं तो मेरे लिए बन्दूक कौन लायेगा । लोइजका ने यों ही लौट कर उत्तर दे दिया ।

और उन्होंने उन्हें मार डाला—जान से ?

हां, जान से ।

शोक और मौन ने अपनी आंखें गड़ा दीं—अंधकार में अज्ञात में—कल्पनातीत हृदय और मस्तिष्क के परे ।

और इसी समय झोंपड़ी के सामने जो बेंच पड़ी हुई थी, उस पर बूढ़े दादा और दादी बैठे थे ।

बाग के घने झुरमुट में हो कर अस्त प्राय सूर्य की अंतिम अरुण किरणें चमक उठीं ।

सन्ध्या मूक थी, पर एक लम्बी, भर्राई और कुछ घुटी हुई-सी सुबकन गौशाला से निकल कर शब्द हीन शून्य में चली गई······शायद वहां गाय अपने बच्चे के लिये रंभाई थी !

न जाने कितने दिन बाद एक-दूसरे के हाथ पकड़े हुए वे वृद्ध और वृद्धा आज बिलकुल पास बैठे हुए थे—पर सर झुकाये हुए······ ।

उस संध्या की स्वर्गिक आभा के अवसान को उन दोनों ने देखा मौन और अश्रु हीन दृगों से······!

रूसी कहानी

पंछी के बोल

पोस्ट व्हीलर

दो बच्चे जिन की मां उन्हें बचपन में ही छोड़ कर चल बसी थी। बाप था, लेकिन उसे अपने व्यापार से जितना लगाव था, बच्चों से उतना नहीं।

छोटे बच्चे इवान को वह बुद्धिहीन समझ कर उसकी उपेक्षा करता था, पर बड़े पुत्र वासिली को स्नेह करता था। उसका खयाल था कि यह व्यापार को बढ़ायेगा।

इवान को पिता की उपेक्षा तो सहनी ही पड़ती थी कभी-कभी मार-पीट तक नौबत पहुँच जाती थी। पर वह बेचारा सब कुछ सह लेता था। वह केवल यही समझता था कि उसके पिता अधिक काम होने के कारण कुछ परेशान रहते हैं और इसी कारण उन का यह व्यवहार है।

एक दिन उनके पिता ने दोनों को एक मेले में भेजा। वासिली को दस और इवान को दो सुवर्ण मुद्रायें दीं और कहा कि—देखें, तुम इससे क्या कमा कर लाते हो। वासिली तो मेले में चला गया, और वहाँ सब पैसा खर्च करके घर लौट आया।

इवान इन प्रपंचों से दूर था। वह जंगल में गया। उसने वहां चिड़ियों की बोली सीख ली। इवान एक सप्ताह बाद घर लौटा। इस बीच वासिली ने अपनी लच्छेदार बातों द्वारा पिता को वशीभूत कर लिया था।

इवान को उन्होंने बड़ा डाँटा-फटकारा। जब उन्हें मालूम हुआ कि

यह [illegible] में रहा है, तब तो और भी क्रोधित हुए ।

इवान ने कहा कि—मैंने जंगल में चिड़ियों की भाषा सीखी है ।

अब तो उसके क्रोध का पार न रहा, बोले— मुझे मूर्ख बनाता है । भला पक्षियों की भाषा भी कोई सीख सकता है ? अच्छा, अगर जानते हो, तो बताओ कि वृक्ष पर बैठी हुई वे चिड़ियां क्या कह रही हैं ?

इवान ने कहा—पिता जी, मैं चाहता हूँ कि आप इसे न पूछें, क्योंकि आप क्रोध से भर उठेंगे और साथ ही आपको विश्वास भी नहीं आयेगा ।

पर व्यापारी नहीं माना और उसने दो कोड़े इवान के जमा दिये । इवान ने और कोई रास्ता न देखकर बताया । इनके कथनानुसार मैं एक दिन राजा बनूंगा—वासिली को मेरे यहाँ साईस की जगह नौकरी करनी पड़ेगी और आपको मेरे हाथ धुलाने के लिए लोटे में पानी और तौलिया लेकर खड़ा होना पड़ेगा ।

व्यापारी बर्दाश्त न कर सका—उसका क्रोध काबू से बाहर हो गया और वह तब तक इवान को कोड़ों से मारता रहा, जब तक वह बेदम होकर जमीन पर न गिर पड़ा ।

+ + +

एक दिन व्यापारी ने दोनों को अपने एक व्यापारी मित्र के यहां भिजवा दिया और कहलाया कि इन दोनों को आपके यहां इस आशा से भेज रहा हूँ कि यह तरक्की करें । वासिली बड़ा समझदार है, यह अपनी जिन्दगी में कामयाब होगा, इसे किसी जगह काम से लगा दें । इवान जाहिल, निकम्मा और मूर्ख है, इसे कहीं छोटे काम पर सफाई आदि के काम से लगा दें ।

दोनों व्यापारी के यहां पहुँच गये । व्यापारी अपने सामने किसी को बुद्धिमान नहीं समझता था । उसने दोनों की परीक्षा लेने का

विचार किया। दोनों को दो फावड़े और टोकरियाँ देकर पहाड़ की चोटी से मिट्टी लाने के लिए कहा। उसने यह भी कहा कि एक टोकरी के बदले में एक सोने की मोहर मिलेगी।

दोनों बड़ी मुश्किल से चोटी तक पहुँचे। कठोर चट्टान देखकर वासिली तो बैठ गया——पर इवान हिम्मत न हारा। वह खोदने में लग गया, उसे देखकर वासिली भी खोदने लगा।

चट्टान खुदने पर उन्होंने देखा कि उसके छिद्रों में चिड़ियों ने अपने घोंसले बना रखे हैं। उनमें अनगिनत अण्डे और बच्चे भरे हुए हैं।

इसी समय आसमान में चिड़ियाँ आकर चहचहाने लगीं। इवान ने कहा——वासिली बंद कर दो। चिड़ियां कह रही हैं कि उनके बच्चों को नुकसान पहुँचा, तो ठीक नहीं होगा।

वासिली बोला——फिर तुमने मूर्खता की बात शुरू की। अपना काम करते रहो। यह और कहीं अपना घोंसला बना लेंगी। अण्डे टूटते हैं, टूटें। बच्चे मरते हैं मरें। हमें तो अपने काम से काम है।

वह निर्दयता से उन अबोध और असहाय जीवों पर प्रहार करता रहा।

\+ \+ \+

शाम को दोनों टोकरों में मिट्टी भरकर निवास की ओर चले। कुछ ही दूर चले थे कि असंख्य चिड़ियों ने वासिली को घेर लिया और अपनी चोंचों से उस पर प्रहार करना शुरू कर दिया। वह गिर पड़ा उसकी टोकरी नीचे घाटी में लुढ़कती हुई गिर गई। वासिली भी पैर फिसल जाने से लुढ़कने लगा और एक क्षण का विलम्ब भी उसके लिए घातक बन सकता था, पर इवान ने उसे सँभाल लिया।

रास्ते में दोनों विश्राम करने के लिए बैठ गये। इवान को नींद आ गई। वासिली ने इस अवसर का पूरा लाभ उठाया, वह उसकी टोकरी लेकर चला गया।

निवास पर पहुँच कर उसने व्यापारी से कहा—इवान तो बहुत ही निकम्मा और जाहिल है। उसने तो कोई काम ही नहीं किया। अभी भी वहीं पड़ा सो रहा है।

व्यापारी ने उसे एक सुवर्ण मुद्रा पुरस्कार में दी। उसने वासिली से पूछा कि—क्या तुम जहाज का काम जानते हो।

वासिली ने उत्तर दिया—मैं जहाजों के हर काम से वाकफियत रखता हूँ। इसके सिवा दिशाओं, मौसम और वायु सम्बन्धी ज्ञान भी मुझे है।

बहुत अच्छा, तो कल हमारा जहाज विदेश जा रहा है। तुम्हें उसके साथ जाना होगा। मैं तुम्हें कप्तान का सलाहकार नियुक्त करता हूँ।

+ + +

इधर अँधेरा हो जाने पर घबराया हुआ इवान आया। व्यापारी तो असन्तुष्ट था ही उसने इवान की मरम्मत की और उसे आधी रात को ही घर से निकाल दिया।

इवान सर्दी की उस भयानक रात में एक वृक्ष के नीचे ठिठुरता रहा। वह सोचने लगा कि जब इसने मेरे साथ ऐसा सलूक किया है तो वासिली के साथ तो न जाने क्या किया होगा। क्योंकि मैंने तो टोकरी भिजवा दी थी। वासिली तो बेचारा अपनी टोकरी से हाथ ही धो बैठा था। पता नहीं बेचारा कहाँ किस स्थिति में होगा।

+ + +

प्रभात हुआ। इवान समुद्र की ओर काम की तलाश में गया। एक जहाज एक जगह जाने को तैयार खड़ा था। वह उसी में नौकर हो गया। इतने में उसकी दृष्टि वासिली पर पड़ी। उसने देखा वह कीमती कपड़े पहने कप्तान के साथ घूम रहा है।

उसे प्रसन्नता तो हुई, लेकिन आश्चर्य भी कम न हुआ। वासिली से

तो उसे पूछने की हिम्मत न पड़ी। क्योंकि उसने तो इवान को देखने के बाद भी अनदेखा जैसा व्यवहार किया। जहाज के एक नौकर से उसे मालूम हुआ कि यह जहाज के काम में बहुत होशियार है। इसलिए इसे कप्तान का सलाहकार बनाया गया है।

इवान सोच लगा कि वासिली तो जहाज के बारे में कुछ भी नहीं जानता। उसे इस तरह चकमा नहीं देना चाहिए था। झूठ का व्यापार ज्यादा दिन तक नहीं चलता।

+ + +

कप्तान ने वासिली की सलाह लेकर जहाज का लंगर उठा दिया। लेकिन यह क्या ! जहाज को मौसम के कारण बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और काफी हानि भी उठानी पड़ी।

कप्तान शीघ्र ही असलियत पर पहुँच गया और उसने वासिली को साधारण मजदूरों के साथ काम में जुटा दिया।

इसी बीच कप्तान को एक मल्लाह ने बताया कि जहाज में एक ऐसा नौकर है, जो चिड़ियों की बोली जानता है। कप्तान ने तुरन्त उसे बुलाकर अपना सलाहकार नियुक्त कर लिया। अब सब काम इवान के संकेत पर होने लगे। जहाज बिना किसी विघ्न-बाधा के गन्तव्य स्थान पर जा लगा। कप्तान ने इवान को बहुत पुरस्कार दिया।

इवान कप्तान के अनुरोध के बाद भी उसी देश में रह गया। वासिली भी इवान के साथ ही जहाज से उतर पड़ा।

इस राज्य का राजा बहुत शक्तिशाली और धनवान था। पर कौवों के उत्पात के कारण वह बड़ा दुःखी था। तीन कौवे दिन भर उसके आस-पास चक्कर काटते हुए काँव-काँव करते रहते थे। रात को भी राजा के शयनागार की खिड़की पर बैठकर चिल्लाते रहते थे। प्रयत्न करने के बाद भी न तो वे भगाये ही जा सके और न कोई उन्हें मार ही सका।

हार कर राजा ने मुनादी करवा दी कि जो कोई इन कौवों से उन्हें छुटकारा दिला देगा, उसके साथ वे राजकुमारी की शादी कर देंगे और उसे राज्य का स्वामी बना देंगे।

वासिली इवान के रोकने के बाद भी न माना और राजा से आज्ञा लेकर कौवों को भगाने के अनेकों प्रयत्न किये। पर असफल रहा।

राजा ने उसे दूसरे दिन फाँसी पर लटकाने का आदेश दे दिया।

इवान को यह सुन कर बड़ा धक्का लगा। उसने वासिली के प्राण बचाने का निश्चय किया।

वह राजा के पास पहुँचा और कौवे भगा देने का अपना निश्चय बताया। कौवों की भाषा वह जानता था। उनकी बात सुनकर उसने पूरी कर दी। कौवे चले गए।

राजा प्रसन्न हुआ। इवान ने उसी समय राजा से प्रार्थना की कि वासिली को प्राणदण्ड न दिया जाय।

राजा ने कहा कि हमारे देश के नियमानुसार जिसे आदेश के बाद भी प्राणदण्ड नहीं दिया जाता, उसे शाही अस्तबल में सईस बन कर रहना होता है।

वासिली को अस्तबल में भेज दिया गया। उसका जीवन घोड़ों की सेवा करते ही व्यतीत हुआ।

\+ \+ \+

राजा ने राजकुमारी की शादी इवान के साथ कर दी और उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

हँसी-खुशी के अनेक वर्ष बीत गए। अब इवान राजा बन गया। एक दिन वह घूमने के लिए निकला। मार्ग में एक दिन दुर्बल बूढ़े ने बड़ी ही दीन भाषा में उससे नौकरी के लिए प्रार्थना की।

राजा इवान ने उसे महल में भिजवा दिया। रात में भोजन के बाद इवान के हाथ धुलाने के लिए वही नौकर आया।

इवान ने उसकी अश्रु पूरित आँखें देखकर पूछा—बूढ़े क्यों रो रहे हो ?

बूढ़े ने कहा—महाराज, मेरा एक बेटा चिड़ियों की बोली जानता था। एक दिन उसने चिड़ियों को बोलते सुनकर कहा था कि वह राजा बनेगा और मैं रजत-पात्र में जल लेकर उसके हाथ धुलाऊँगा। मैं तो अपना काम कर रहा हूँ लेकिन न जाने मेरा इवान कहाँ होगा ?

मैं ही आपका इवान हूँ, पिताजी ! और वह बूढ़े के पैरों से लिपट गया।

चीनी कहानी

धरती का अधिकार

याओचिंग

यालू नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित रेलवे स्टेशन की मशीनशाप का मैं एक औहदेदार था। एक दिन जब मैं उन बायलरों और रेल के डिब्बों का निरीक्षण करने जा रहा था। जिन्हें क्रूर अमेरिकन स्वभाव का शिकार होना पड़ा था, मुझे अपनी पत्नी किम-टान-की को आते देखकर कम आश्चर्य न हुआ।

टान-की स्टेशन के समीप वाले अस्पताल में एक प्रमुख नर्स थी और काम के घण्टों में बेहद जरूरी काम हुए बगैर वह अस्पताल न छोड़ती थी।

मुझे एक गरम स्वेटर जो उसने मेरे लिए बुना था, दे दिया और फिर एक अजीब सी उत्सुकता से वह गोलियों के निशानों की ओर घूम गई और कहा—'मुझे सिओल से माँ का अभी-अभी एक खत मिला है। लिखा है कि अमेरिकन यान हर जगह बमबारी कर रहे हैं।'

मैंने टान-की के चेहरे की ओर देखा, जो बिल्कुल शांत था। मेरी पत्नी चीनी भाषा अधिक अच्छी तरह बोल लेती थी, जितनी कि मैं कोरियन नही बोल पाता था गोकि यह यालू नदी के दूसरे किनारे पर पैदा हुई थी और इस किनारे पर—चीन की मिट्टी में बड़ी हुई थी।

'आज तुम्हें कुछ काम नहीं है क्या?' मैंने जिज्ञासा की।

गोलियों के निशानों पर वह अपनी उंगलियां फेरती रही। फिर तनिक मुस्कराई। गर्म स्वेटर मेरे हाथ से ले लिया और स्थिर होकर

कहा—'आज रात शयन कक्ष में मैं तुम्हारा इंतजार करूँगी। किसी मसले पर मैं तुम से चर्चा करना चाहती हूँ।'

और फिर वह रेल की पटरियों को धीरे-धीरे लाँघ गई और अदृश्य हो गई।

जब मैं घर पहुँचा तो गहरा अंधेरा हो चुका था। मैंने टान-की को अपने बच्चे के सूती गाउन की दुरुस्ती करते पाया। मैंने मुँह धोया और उसके समीप जाकर बैठ गया।

'स्वेटर मेरे ठीक बैठता है।' मैंने स्वेटर की ओर इशारा कर बात-चीत का सिलसिला शुरू किया।

टान-की ने सूई और धागे को बाजू में रख लिया। सूती गाउन जिसे कि वह अभी-अभी दुरुस्त कर रही थी, झटक कर तकिये पर रख दिया।

'सर्दी अब पड़ने लगी है। याद रखो, हां जब भी तुम बाहर जाओ, नन्हें लुंग के लिए इसे ले जाना न भूलना।' लुंग हमारा आठ वर्षीय पुत्र था।

'अच्छा, क्या मामला था वह जिस पर कि तुम मुझसे चर्चा करना चाहती थीं।' मैंने पूछा। मगर उसने कोई जवाब नहीं दिया।

मैंने फिर पूछा—'आखिर बात क्या है?'

कुछ क्षण वह चुप रही, फिर बोली—'हर इन्सान अच्छी जिन्दगी बिताना चाहता है और सुखी एवं प्रसन्न रहने की इच्छा रखता है। लेकिन···।' वह अपनी नजर मेरी ओर बराबर गड़ाये रही।'···लेकिन वह इन्सान सुखी नहीं रह सकता, जो अपनी जवाबदारी और अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक नहीं होता।'

टान-की के मुंह से इन शब्दों को जबसे हम विवाह कर साथ रहने लगे थे—मौके बे-मौके कई बार सुन चुका था। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से जिन्दगी में स्थिरता आती जा रही थी। उदाहरण के लिए टान-की अब ज्यादा गम्भीर और संतुलित हो गई थी। अपने में विश्वास की

भावना पैदा कर चुकी थी। नन्हें लुंग को स्कूल में भरती करा दिया गया था। टान-की और मैंने अपने फुरसत के वक्त का आनन्द भी लेना शुरू कर दिया था। हम दोनों ही पास के बाजारों में दूकानदारी करने इक्ट्ठे जाते थे। कभी यालू नदी पर घूमने निकल जाते थे। इस समय हमारी नौकरियां 'खतरे से दूर थीं, और हम दोनों ही अपने काम से प्रसन्न थे।

'लेकिन इस वक्त तुम यह लैक्चर क्यों दे रही हो कि एक व्यक्ति यदि वह अपने कर्त्तव्य से जागरूक नहीं रहता, तो सुखी नहीं रह सकता।' मैंने पूछा—'आखिर तुम कहना क्या चाहती हो ?'

'पिछले दिनों से मैं कई मसलों पर अकेले विचार कर रही हूँ।' उसने कुछ कठिनाई महसूस करते हुए कहा—'मैं तुमसे इन्हीं मसलों पर बात करना चाहती थी। मैं कोरिया वापस जाना चाहती हूँ।'

सन्नाटे में आकर मैंने हाथ का प्याला मेज पर रख दिया। जो कुछ वह अभी-अभी कह गई थी, उससे दिमाग में उथल-पुथल मच गई। टान-की मेरी पत्नी वापस कोरिया जाना चाहती है। मुझे, अपने पति को छोड़कर। अपने नन्हें लुंग को छोड़कर। मैं काफी परेशानी में पड़ गया।

उसने सिर हिलाकर स्वीकृति दे दी।

'क्यों-क्यों क्या मामला है ? क्या, तुम वास्तव में जाना चाहती हो ?

'नहीं, नहीं, तुम नहीं जा सकती। मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगा। मैं यकायक उबल पड़ा। कुछ क्षण हम दोनों के बीच खामोशी तंग रास्ते में रेंगती रही। टान-की ने अपनी आँखों को फैलाकर एक निराश दृष्टि से मुझे देखा।

'तुम क्या चाहते हो, यही न कि तुम मुझे जाने न दोगे।' उसने रुखाई से पूछा। मैं अपने शब्दों को दुहरा कर चुप हो गया।

अपनी आवाज में लोच लाकर उसने फिर कहना शुरू किया—मैं

जानती हूँ कि तुम मेरे जाने में बाधा न डालोगे। तुम जो कुछ भी अभी कह रहे हो, उसे बगैर जाने ही, तुम कहे जा रहे हो, क्योंकि इन शब्दों का तुम्हारे मुंह से निकलना ही अस्वाभाविक है। तुम जानते हो, यहां से जाने के खयाल मात्र से मुझे कितना रंज हो रहा है। लेकिन यदि मैं यहां रह जाती हूँ, तो क्या तुम सोचते हो कि मैं स्थिर रह सकूँगी। क्या मैं ऐसी परिस्थिति में. सम्भव है, सुखी रह सकूंगी।

उसकी बात से मुझे चोट पहुँची। मैंने अपने जिले के कोरियायी साथियों को पुनः लड़ने के लिए कोरिया जाते देखा है। लेकिन मैं इस विचार को कभी अपने दिमाग में ला भी नहीं सकता था कि मेरी टान-की भी ऐसा चाहेगी।

'क्या उसकी नौकरी यहाँ अच्छी नहीं थी। या रेलवे अस्पताल में उसका काम कम महत्त्वपूर्ण था। और यदि वह चली जायेगी, तो क्या होगा ? जीवन में प्राप्त हुई वह शान्ति भी नष्ट हो जायगी।

मैं बोला—और, नन्हें की देखभाल कौन करेगा ?'

हाथ के रूमाल का एक कोना मरोड़ते हुए टान-की ने गर्दन उठाई और कुछ सख्त होकर मेरी ओर देखा। फिर बिना कुछ कहे, अपनी गर्दन को नीचे लटका लिया।

उसकी इस चुप्पी ने मुझे भी झकझोर दिया। मुझे अंदर ही तकलीफ होने लगी और अपने व्यवहार पर पश्चात्ताप भी। मैं उसकी ओर बढ़ा और उसके सामने ही बैठ गया। कोरिया की इस बहादुर दृढ़ और निश्चयी बेटी, जिसके साथ मैं कई वर्ष गुजार चुका था। आमने-सामने बैठते मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं कुछ भी बोलने में समर्थ नहीं हूँ। बीते हुए जमाने की वे सब घटनाएँ, जो हम दोनों के बीच गुजरी थीं, मेरे दिमाग में आने लगीं। मुझे टान-की से अपनी बारह वर्ष पुरानी मगर पहली मुलाकात याद हो आई।

\+ \+ \+

वह सन् १९३७ की शीत थी। श्वेत बर्फ की तहें पहाड़ियों

और मैदानों पर जम गई थीं। तभी एकाएक एक भयानक विस्फोट हुआ। जिससे आस-पास के तमाम पेड़ उखड़ गये थे। उस वक्त गुरिल्ला लड़ाकुओं की एक टुकड़ी के साथ मैं काम कर रहा था। स्थान हियोकाल के नजदीक ही था। जहाँ कि जापानी गश्ती टुकड़ी से हमारा मुकाबला हुआ था। यह तय हुआ था कि हमारी टुकड़ी का एक भाग मित्र फौजों से सम्पर्क कायम करे और शेष भाग शत्रुओं की ओर अपनी बन्दूकों का मुंह फिरा दे।

मैं उस दल में था, जो ठहर कर शत्रुओं का मुकाबला करने वाला था। एक कोरियन युवक किम को टुकड़ी के साथ जाना था। परन्तु चुपचाप पीछे रह गया और सीधे घमसान युद्ध में कूद पड़ा। 'एक्शन' के दौरान में उसके सिर पर भारी अघात लगा।

अपने कन्धे पर उसे लादे मैं आगे बढ़ती हुई टुकड़ी से मिलने के लिए जल्दी-जल्दी भागने लगा। ज्यादातर रास्ते घने और बियाबान जंगलों से होकर जाते थे। बर्फीला तूफान तब थम गया था, परन्तु वृक्ष के पत्तों पर अटकी हुई बर्फ फिसल-फिसल कर धरती पर गिर रही थी।

किम के जख्म पर मैंने पट्टी बांध दी थी, लेकिन खून का बहना बंद नहीं हुआ। मैंने उसे गर्म कोट में अच्छी तरह लपेट लिया और बढ़ता गया। आखिर सुबह हुई और तब तक मैं बेहद थक चुका था उस वक्त हम पड़ोसी टुकड़ी के हैड-क्वार्टर के पास ही करीब-करीब पहुँच चुके थे। जबकि मझोले कद के एक साथी ने मुझे अपनी सेवाएँ अर्पित करनी चाहीं और मेरे जख्मी साथी को अपने स्वयं के कंधों पर उठाने के लिए आग्रह किया।

उसकी बातचीत से मैं समझ गया कि वह स्त्री है। अपनी बन्दूक को मुझे देकर उसने किम को कंधे पर लाद लिया।

'यह तो महज लड़का ही है।' उसने ताज्जुब से वजन की कमी का अन्दाजा लगाते हुए पूछा।

'हाँ, केवल सोलह बरस का।'

'क्या नाम है इसका ?' उसने पूछा ।

'कम-लुंग-चुंग ।'

मेरे जवाब ने उसे स्तम्भित कर दिया । उसने उसे जमीन पर लिटा दिया और माचिस जलाकर चेहरे को गौर से देखा, और ऐसा महसूस हुआ कि मानो वह उससे कुछ कह रही है ।

अपनी आँखों में आंसू लिए उसने मेरी ओर देखा और फिर बोली— 'यह मेरा भाई है ।'

किम-टान-की से यह मेरी पहली मुलाकात थी ।

+ + +

दीये के मद्धिम प्रकाश में मेरे सम्मुख बैठी, मेरी पत्नी टान-की ने मुझे बारह वर्ष पहले की उस लड़की की याद दिलाई । अब टान-की आठ वर्ष के बालक की मां है । लेकिन वर्तमान की शाँत और स्थिर जिन्दगी भी उसके साहस को न डिगा सकी । बावजूद इसके, उसका मस्तिष्क अभी भी उतना ही परिष्कृत था और उसका साहस अदम्य ।

मुझे याद आने लगा कि कठिनाइयों के वक्त उसने किस तरह अपने महान उत्तरदायित्व को निभाया । जिसमें वह फौलाद बनकर निकली और, मुझे याद आया कि उसकी इसी भावना ने मुझे किस तरह दुर्गम स्थानों से संकट के वक्त उभारा । मेरे दिमाग में सन् १९४२ की उसकी बहादुरी की तस्वीर खिंच गई जबकि भूमिगत कार्य करते हुए हमें जापानियों ने गिरफ्तार कर लिया था । परंतु वे एक भी शब्द टान-की से न उगलवा सके । उसे बेहद पीटा गया और असीम यंत्रणाएँ दी गईं ।

जितना ही ज्यादा मैं अपनी जिन्दगी के बारे में सोचता था, आज के अपने रवैये की टान-की के साहस के साथ तुलना कर शर्मिन्दा होता था ।

दो वर्ष की आराम की जिन्दगी ने ही मेरी कर्त्तव्य भावना पर अकर्मण्यता का व मायूसी का पर्दा डाल दिया । मुझमें इतनी उदारता आ गई थी और जीवन के प्रति मेरा क्रांतिकारी दृष्टिकोण न रह पाया था ।

क्या मैं जीवन में किसी उथल-पुथल को बर्दाश्त करने के लायक नहीं रह गया था। और मैं पूरी तरह से अपनी तर्क बुद्धि से इस पर विचार करने लगा था जब टान-की ने धीमी आवाज में कहा—'मैं यहाँ ठहरकर कैसे सुखमय जीवन बिता सकती हूं।' जबकि मेरा अपना देश संकट में है।

मुझे जल्दी इसी बात को समझ लेना चाहिए था कि कोरिया की मिट्टी उसके लिए क्या अर्थ रखती है। उसके अपने गांव और अपने लोग उसके दिमाग में कितना स्थान रखते हैं।

अमेरिकन यानों द्वारा उसके अपने देश पर बमबारी होते देख और अमेरिकन सिपाहियों द्वारा उसकी जन्मभूमि को रौंदते देख उसका कर्त्तव्य नहीं हो जाता था कि वह भी अपने देश को वापस लौटे और उस महान संघर्ष में योगदान दे।

मुझे अपने पर तरस आ गया और शर्म महसूस होने लगी। मैं टान-की को प्यार करता हूं और यह भी निर्विवाद सत्य है कि मुझे शांतिपूर्ण एवं आरामप्रद जिन्दगी ज्यादे पसंद है। परन्तु इस महान संघर्ष में योगदान तो करना ही होगा।

टान-की मेरे मुंह की ओर देखते ही मेरे विचारों को ताड़ गई और उल्लसित हो कर मुस्करा दी।

रूसी कहानी

इलियास

लिओ टाल्सटाय

पूर्वी रूस में यूफा के पास एक गाँव में इलियास नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसका पिता उसे निर्धन छोड़ कर ही मर गया था, परन्तु इलियास ने, जिसके पास उस समय ७ घोड़े, २ गायें तथा २० भेड़ें थीं, अपने को एक सफल मालिक बना लिया और अपनी संपत्ति बढ़ाने लगा। वह और उसकी औरत सुबह से शाम तक कठिन परिश्रम करते थे सब पड़ोसियों से पहले उठते और सबके बाद सोते थे। वे प्रतिवर्ष उन्नति करते गये और धीरे-धीरे धनवान बन गये !

बहुत शीघ्र ही उसके पास २०० घोड़े १५० चौपाहे तथा १२०० भेड़ें हो गईं। उनके यहाँ इन जानवरों को चराने के लिए कई नौकर थे जिनमें औरतें भी शामिल थीं जो गायों को दुहती और उससे दही, मक्खन तथा पनीर बनाती थीं। इलियास के पास किसी बात की कमी नही थी। इससे सब पड़ोसी उससे ईर्ष्या करते थे और कहते थे—"इलियास भाग्यशाली है। उसके पास उसकी सभी इच्छित वस्तुएँ हैं।"

इलियास के कई मित्र हो गये थे। दूर-दूर से मेहमान आते थे और उसने उन सबकी मेहमानदारी दिल खोल कर की। अथिति कौन हैं ? इसकी उसे चिन्ता नहीं थी ! हर एक अतिथि लस्सी और चाय, नींबू के शरबत और मांस से प्रसन्न होता था। कम मेहमान हुए तो एक भेड़ मारी जाती थी और अगर मेहमान अधिक हुए तो एक घोड़ी का बलिदान होता था।

इलियास के दो लड़के तथा एक लडकी थी, जिन सब की उसने शादी कर दी थी। गये दिनों में उसके लड़कों ने उसके साथ काम किया, घोड़े, चौपाहे और भेड़ें चराईं, मगर उसकी कामयाबी ने लड़कों को बिगाड़ दिया! उनमें से बड़ा तो पक्का शराबी हो गया और एक लड़ाई में मार डाला गया तथा दूसरे छोटे लड़के को लड़ाकू सिर चढ़ी, जिद्दी औरत मिली जिसने अपने पति को पिता के विरुद्ध भड़काकर सम्पत्ति का हिस्सा माँगने को उकसाया! इलियास ने उसे अपने हिस्से का एक मकान, कुछ घोड़े और चौपाये देकर अलग कर दिया!

इसके साथ ही इस वृद्ध इलियास की भेड़ों पर प्लेग का प्रकोप हुआ जिससे उसकी सैकड़ों की संख्या में भेड़ें मर गईं फिर अनावृष्टि के कारण दुष्काल पड़ा, घास नहीं हुई, इससे सर्दी में कई चौपाहे नष्ट हो गये। कुछ वहशी डाकू उसके अच्छे घोड़ों का समूह चुरा ले गये।

इस प्रकार इलियास अब बहुत गरीब हो गया था और उसकी शारीरिक शक्ति भी क्षीण होने लगी थी!

सत्तर वर्ष की उम्र तक उसने अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए समूर, कम्बल, जीन, काठी तम्बू आदि सब बेच डाले और अन्त में भेड़ें, घोड़े, चौपाहे वगैरा जीविकोपार्जन के साधन भी बेच देने पड़े। अपने बुढ़ापे के दिनों में उसे दूसरों के यहाँ जाकर रहने को बाध्य होना पड़ा। सुख-समृद्धि की वस्तुओं में से उसके पास केवल तन ढकने को कपड़े, एक समर का बना कोट, एक टोपी, उसके मौरक्को के बने चप्पल और उसकी पत्नी शाम शोभागी, जो अब वृद्ध हो गई थी! उसका लड़का जिसको इलियास ने संपति का हिस्सा दे दिया था। दूर देश में चला गया था और उसकी एक मात्र लड़की मर चुकी थी। ऐसा कोई नहीं था जो उसकी सहायता कर सके।

लेकिन उनका सहृदय पड़ोसी—मुहम्मद शाद—जो पूर्णतया सुखी था, उन पर तरस खाकर कहने लगा—"आप अपनी औरत सहित मेरे यहां रहो। गर्मी में शक्ति के अनुसार बगीचे में काम करना और जाड़े

में चौपायों को चराना। आपकी औरत गाय को दुहेगी और दही बिलोयगी। मैं आपको रोटी, कपड़ा और जरूरत की सभी वस्तुएँ देता रहूँगा।"

इलियास ने उसे धन्यवाद दिया तथा वह और उसकी औरत मुहम्मद शाह के यहां रहने लगे। पहले यह कठिन जान पड़ा पर शीघ्र ही आदत हो गई। दोनों यथाशक्ति परिश्रम करते। स्वयं एक मालिक रह चुकने के कारण वे सब काम को ठीक ढंग से कर लेते थे। काम से जी चुराना उन्हें नहीं आता था लेकिन मुहम्मद शाह उनकी यह दशा देख कर दुखी होता था।

एक दिन दूर से कुछ अतिथि मुहम्मदशाह के यहाँ आये। मुहम्मद शाह ने एक भेड़ पकड़वा कर मरवा डाली, तथा इलियास ने उसे साफ कर ठीक ढंग से पकाकर मेहमानों में भेज दी। मांस और चाय खा पी लेने के पश्चात, वे गलीचे पर बैठे गप शप करते लस्सी पीने लगे। मोहम्मद शाह ने जब देखा कि इलियास अपना काम कर दवाजे की तरफ से चला गया है तो उसने मेहमान से कहा—"आपने उस बूढ़े व्यक्ति को देखा जो अभी यहां से गुजर गया है? एक समय वह पड़ोस का अमीर था। शायद आपने उसके विषय में सुना हो! उसका नाम इलियास है।

"अवश्य, मैंने सुना है" मेहमान ने उत्तर दिया—"मैंने स्वयं तो उसे कभी देखा नहीं, मगर हाँ, उसका नाम तो दूर दूर तक प्रसिद्ध है।"

"परन्तु अब तो वह एक गरीब के समान ही हो गया है। वह मेरे यहाँ नौकर है और इसी तरह उसकी औरत भी घोड़ियों और गायों को दुहती है।"

मेहमान यह सुन कर आश्चर्य करने लगा सिर हिलाते हुए एक मेहमान के सूत्ररूप में कहा—भाग्य सचमुच एक चक्र है। एक को ऊँचा उठा देता है तो दूसरे को नीचा गिरा देता है। अच्छा, क्या वह बूढ़ा अपने भाग्य को कोसता है?

यह मैं नहीं कह सकता। मैं तो इतना जानता हूँ कि वह निरुपद्रवी शान्ति शील और कठिन परिश्रमी व्यक्ति है।

तब मेहमान ने उत्सुकता से कहा—अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं उससे कुछ बात कर उसके जीवन संबंधी प्रश्न पूछना चाहता हूँ!

"अवश्य, आप पूछ सकते हैं" मुहम्मद शाह ने जवाब दिया और इलियास को संबोधित करते हुए बोला—"दादा, अन्दर चले आओ और यह लस्सी पीओ। साथ में अपनी औरत को भी लेते आना!"

दोनों वृद्ध स्त्री-पुरुष अन्दर आ गये। इलियास ने मेहमानों और अपने मालिक को सलाम किया, कुछ प्रार्थना की और दरवाजे के पास बैठ गया तथा उसकी औरत मालकिन की तरफ परदे के पीछे बैठने को चली गई। जब लस्सी का प्याला इलियास को दिया गया तब फिर उसने सबको सलाम किया, झुका और पीकर प्याले को नीचे रख दिया।

"दादा" इच्छुक मेहमान ने पूछा—"मैं सोचता हूँ आप अपनी वर्तमान दशा को विगत दिनों की समृद्धशाली दशा से तुलना कर बड़े दुखी होते होंगे ?"

इलियास हंस दिया और बोला—"अगर मैं आपको यह बता दूं कि मैं सुख-दुख के विषय में क्या सोचता हूँ तो आप मुझपर विश्वास नहीं करेंगे। आप मेरी पत्नी से ही पूछ सकते हैं। वह नारी है, और नारी के हृदय में जो कुछ होता है, वह सब उसकी वाणी में भी रहता है। वह आपको सम्पूर्ण सत्य कह देगी।"

तब मेहमान ने पर्दे के पीछे बैठी हुई इलियास की पत्नी से कहा—"अम्मा जी, क्या आप अपनी प्राचीन समृद्धि और वर्तमान दशा के विषय में अपने विचार बतलाने का कष्ट करेंगी ?

"जरूर" बूढ़ी अम्मा ने पर्दे की आड़ से कहा—"मेरे विचार ये हैं। पचास वर्ष तक मैं और मेरा पति सुख की खोज करते रहे फिर भी हम

उसे नहीं पा सके। लेकिन आज जब दो वर्षों से हमारे पास कोई संपत्ति नहीं है और एक नौकर की तरह रहना पड़ रहा हैं। हमें वह सुख प्राप्त हो रहा है, जिसको हम इतने समय से व्यर्थ में खोज रहे थे।"

उसकी इस बात से सब अचम्भित हो गये। और मुहम्मद शाह तो उठकर पर्दे के पीछे झांकने लगा। वह हाथ जोड़े अपने पति की ओर देखती हुई हंस रही थी। बूढ़ा भी हंस रहा था।

"मैं झूठ नहीं कह रही हूँ" वह कहती गई—"एक सीधी-सच्ची बात कह रही हूँ। हमने सुख को पचास वर्षों तक खोजा और समृद्धि के दिनों में भी हम उसे नहीं पा सके। अब जब हमारे पास कुछ नहीं है और हम दूसरों के यहाँ नौकर हैं हमें ऐसा सुख मिला है कि हम और कुछ नहीं चाहते।

"अच्छा, आपके सुख का रहस्य क्या है ?"

"रहस्य, यह है। जब हम अमीर थे तब मुझे और मेरे पति को एक क्षण के लिए भी चैन नहीं था। हमारी चिन्ताएँ इतनी अधिक थीं कि हमें बात करने, अपने विषय में सोचने अथवा प्रार्थना करने तक का अवकाश नहीं मिलता था। मेहमानों का सत्कार करने, व उन्हें उपयुक्त भेंट देने के विषय में सोचने से ही समय नहीं मिलता था। जब मेहमान न हों तो नौकरों की तरफ देखना पड़ता था। वे तो सिर्फ खाने और काम से जी चुराने की ही सोचते थे। जबकि हमें इस संपत्ति के विषय में भी सोचना पड़ता। कभी भेड़िये से ही डरते, तो कभी चोरों का ही भय लगा रहना, और कहीं भेड़ मेमने को न कुचल डाले आदि चिन्ताओं के कारण हम सुख से सो नहीं पाते थे। रात में उठते और शत्रु की खोज में चारों ओर घूमते और जब मेमने सुरक्षित मिलते तो दूसरी चिन्ता सवार हो जाती—जाड़े के लिए घास-भूसा कैसे मिलेगा ? इन चिन्ताओं के अतिरिक्त सबसे अधिक खटकने वाली बात यह थी कि हम कभी आँख से आँख नहीं देखते थे। किस काम को किस तरह से करना इस विषय पर असम्मत हो जाते। यहां तक कि झगड़ने का

मौका आजाता। इस प्रकार एक चिन्ता के पश्चात दूसरी चिन्ता ही हमारी जिन्दगी थी और सुख हमसे कोसों दूर थ.।"

"और अब ?"

"अब हम सुखी हैं। उठकर प्रेम और प्रसन्नता से बातें करते हैं। क्योंकि अब चिन्ता करने या झगड़ने की कोई बात नहीं हैं। हमारी केवल एक ही चिन्ता है—मालिक की किस तरह अच्छी से अच्छी सेवा की जाय। हम यथा शक्ति इच्छानुसार काम करते हैं, पर इस बात का ध्यान रखते हैं कि मालिक को कोई हानि न हो बल्कि वह हमारे द्वारा कुछ पा सके। काम से निवृत्त होने पर हमारे लिए दिन का भोजन व ब्यालू तथा लस्सी तैयार है। अगर सर्दी हुई तो आग के लिए कण्डे और शरीर पर लपेटने के लिए समर के कोट रहते हैं। पचास वर्ष तक हमने सुख खोजा और अब कहीं जाकर हम उसे प्राप्त कर सके हैं।"

इस बात पर सब मेहमान हंस पड़े, पर इलियास ने कहा—"भाई, हंसने की बात नहीं। यह कोई मजाक नहीं है बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव की बात है। जब हमने हमारी संपित्त खोई तब हम उसके लिए बुरी तरह से रोए, परन्तु ईश्वर ने हमें अब सच्चाई बतलादी और वही हम आपको कह रहे हैं। मजाक के लिए नहीं, हित के लिए।"

"इलियास ने विवेक की बात कही है" मौलवी ने कहा—"और बिलकुल सत्य बात कही है। ऐसी ही 'पवित्र पुस्तक' (कुरान) में भी लिखा है।

तब मेहमानों ने हंसना व मजाक करना बंद किया और सुनी हुई बातों पर विचारने लगे !

इंग्लिश कहानी

पहला तारा मेरा

चॉर्ल्स डिकेन्स

एक समय की बात है कि एक बहुत सुन्दर लड़का एक पहाड़ी गाँव में रहता था। वह अपनी छोटी जिन्दगी में भी काफी भटका था और उसने बहुत सी सुन्दर-सुन्दर वस्तुओं के बारे में सोचा था। उसकी एक नन्ही-मुन्नी बहन थी और वह उसकी प्रत्येक खेल की संगिनी थी। ये दोनों सारे दिन भर प्रकृति की शोभा देख-देख कर आश्चर्य किया करते थे। वे फूलों की सुन्दरता पर आश्चर्य करते थे, वे आसमान की ऊँचाई और नीली आभा पर आश्चर्य करते थे, वे चमकते हुए समुद्र और नदी के पानी की गहराई पर आश्चर्य करते थे और वे उस परमात्मा की भलाई और शक्ति पर आश्चर्य करते थे जिसने इतना सुन्दर संसार बनाया था।

वे अक्सर एक एक दूसरे को कहा करते थे—

'मान लो इस धरती के सारे बच्चे मर जाएं, तो क्या खूबसूरत-खूबसूरत फूल, पानी के झरने और यह नीला आसमान उदास न होगा?'

वे विश्वास करते थे कि वे अवश्य उदास हो जावेंगे। और कहते थे—'क्योंकि अधखिली कलियां फूलों के बच्चे हैं, और छोटे-छोटे उछलते कूदते झरने जो हिरनों की तरह कूदते हुए पहाड़ियों के किनारे से निकल जाते हैं, वे पानी के बच्चे हैं, और सबसे छोटे चमकते हुए टिमटिमाते तारे जो सारी की सारी रात आँख मिचौनी खेला करते हैं, वे अवश्य ही

तारों के बच्चे हैं। इसलिए वे सब जब ये देखेंगे कि उनके साथी आद-मियों के बच्चे अब जीवित नहीं हैं, तो वे अवश्य ही उदास हो जायेंगे।' और यह कहकर चुप हो जाते थे।

और वहीं चर्च के गुम्बद के पास कब्रों के ऊपर एक स्वच्छ चमकता हुआ तारा था जो आसमान के अन्य तारों से पहिले उदय होता था। वे सोचा करते थे कि यह तारा दूसरे तारों से अधिक बड़ा और अधिक ही सुन्दर था, और प्रत्येक रात्रि को वे खिड़की के पास सटे हुए खड़े होकर उस तारे की प्रतिक्षा किया करते थे।

जो भी कोई पहिले देखता था, चिल्ला उठता था—'पहिला तारा मेरा।'

और अक्सर वे दोनों बहन-भाई साथ-साथ चिल्लाया करते थे, क्योंकि वे यह अच्छी तरह से जानते थे कि यह तारा कहाँ उदय होगा और कब ? ओर वे इस तारे के ऐसे मित्र बन गये कि अपने गर्म-गर्म लिहाफ को ओढ़ने से पहिले, वे हमेशा ही बाहर आसमान की ओर एक बार फिर देख लिया करते थे कि उस तारे को नमस्कार कर लें। और जब उनकी नन्हीं-नन्हीं आँखें झपकने लगती थीं, तो वे कहा करते थे—

'परमात्मा तारे को आशीर्वाद दे।'

और जब वह बहुत ही छोटी थी——ओह बहुत-बहुत ही छोटी थीतब बहना को ज्वर हो गया और वह इतनी कमजोर होगई, कि वह रात्रि के समय खिड़की के पास खड़ी न हो सकती थी, और तब अकेले बच्चे ने उदासी के साथ बाहर आसमान की ओर देखा, और जब उसने उदय होता हुआ तारा देखा, तो वह मुड़ा, और फिर ज्वर में तपे हुये लिहाफ में लिपटे पीले चेहरे से कहा—'पहला तारा मेरा।'

तब पीले चेहरे पर एक मुस्कान सिमट आती, और एक कुछ कम-जोर सी आवाज कहा करती—

'परमात्मा मेरे भाई को आशीर्वाद दे और तारे को भी।'

और ऐसे ही वह समय बहुत जल्द आ गया, जब बालक अकेला

आसमान की ओर देखने लगा, और जब लिहाफ में लिपटा हुआ कोई भी पीला चेहरा न होता था, और जब उन पुरानी कब्रों में एक छोटी सी कब्र भी होती थी जोकि उनमें पहिले उपस्थित न थी और जब ज्यों ही वह आंसुओं में से तारे को देखता, तारा उस पर लम्बी किरनें फेंका करता था।

अब इस तारे की किरणें इतनी चमकदार थीं, और वे धरती से आसमान तक एक स्वच्छ और चमकीला मार्ग-सा बनाये महसूस होती थीं। और जब तारे का स्वप्न देखता, और वह स्वप्न देखता कि आदमियों की भीड़ उस स्वच्छ और चमकीले मार्ग से फरिश्ते द्वारा ले जाई जा रही है। और तारे के मुख्य द्वार ने एक महान रोशनी का संसार उसे दिखा दिया, जहाँ बहुत सारे फरिश्ते आदमियों की भीड़ का स्वागत करने को खड़े थे।

ये सब फरिश्ते जो प्रतिक्षा कर रहे थे, उन्होंने अपनी चमकती हुई आंखों से आदमियों की भीड़ को टटोला, जोकि फरिश्तों के द्वारा स्वर्ग लाये जा रहे थे, और कुछ उन लम्बी लाइनों से बाहर निकल आये कि जिनमें वे खड़े थे और आदमियों की गर्दनों पर टूट पड़े। बड़े प्यार से उनका चुम्बन लिया और फिर वे फरिश्ते उनके साथ रोशनी के मार्ग से लौट गये। वे उनके साथ से प्रसन्न थे।

और जो लिहाफ में लिपटा यह स्वप्न देख रहा था, प्रसन्नता से रो पड़ा।

लेकिन वहाँ बहुत सारे फरिश्ते थे जो उन आदमियों के साथ प्रकाश के मार्ग से नहीं गये। और वह बालक उनमें से एक को पहचानता है। उस ज्वर में तो चेहरे को जो एक बार लिहाफ में लिपटा था और जो अब स्वर्गिक सौंदर्य और स्वच्छता से जगमगा रहा था, और उसके हृदय ने फरिश्तों की इतनी भीड़ में से भी अपनी बहन को ढूंढ निकाला।

उसकी बहन का फरिश्ता तारे के मुख्य द्वार के पास भटक रहा

था और फरिश्तों के उस मुखिया से, जो आदमियों की भीड़ को तारे के द्वार तक लाया था, पूछा—

'क्या मेरा भाई आया है ?'

और उसने कहा—'नहीं।'

वह आशा पूर्वक वापिस लौट रही थी, तभी बच्चे ने अपनी बाहें फैला दीं और चिल्लाया।

"ओ बहना मैं यहाँ हूँ। मुझे ले जाओ बहना !"

"और जब बहन ने अपनी चमकती हुई—आँखें उसकी ओर मोड़ी, और तब वह रात्रि का समय था। तारा कमरे से चमकता दिखाई देता था, और उसने अपनी आंसुओं भरी आँखों से देखा, तब तारा अपनी लम्बी-लम्बी किरणें उसकी ओर फेंक रहा था।

और उसी पल से वह उस तारे को अपना घर समझने लगा, जहां उसे समय आने पर जाना है, और वह सोचता कि वह धरती का ही अकेला रहने वाला नहीं है, लेकिन वह तारे का भी रहने वाला है, क्योंकि उसकी बहन का फरिश्ता वहाँ जा चुका है।

फिर कुछ समय बाद एक बच्चा हुआ जो कि उसका भाई था, और जबकि वह इतना छोटा था कि उसके अधरों से अभी एक शब्द भी न निकला था, उसने अपनी नन्हीं सी जान पलंग पर फैला दी और मर गया।

और फिर दुबारा उसको खुले हुये तारे फरिश्तों की भीड़, आदमियों का झुण्ड, फरिश्तों की लाइनें, जिनकी आँखें चारों ओर आदमियों के चेहरों पर टिकी हुई थीं---इनका स्वप्न देखा।

उसकी बहन के फरिश्ते ने मुखिया से पूछा—

'क्या मेरा भाई आया ?'

और उसने कहा—'हां, वह नहीं, पर दूसरा।'

और ज्यों ही बहन के फरिश्ते ने नये भाई के फरिश्ते को अपनी

बाहों में उठा लिया, तब वह चिल्लाया--ओ, बहन ! मैं यहाँ हूँ। मुझे ले जाओ, बहन !'

और वह मुड़ गई। उसपर वह मुस्कराई। फिर भी तारा चमक रहा था।

समय आया और वह जवान आदमी बन गया।

एक दिन वह अपना हिसाब लिख रहा था, तब एक वृद्ध नौकर आया और कहा—

'आपकी मां का स्वर्गवास हो गया और मैं उनके आशीर्वाद उनके प्यारे पुत्र के लिए लाया हूँ।'

फिर रात्रि में उसने तारा देखा और वह सब कुछ जो पहले देखा था। उसकी बहन के फरिश्ते ने मुखिया से पूछा—

'क्या मेरा भाई आया ?'

और उसने कहा—'तुम्हारी माँ।'

और एक बहुत प्रसन्नता का स्वर सारे के सारे तारों में गूंज उठा, क्योंकि माँ अपने दो बच्चों से मिली थी, और उसने अपनी बाहें फैला दीं और चिल्लाया—

'ओ, माँ ! बहन ! और भाई, मैं यहाँ हूँ। मुझे यहाँ से ले जाओ।'

और उन्होंने उसको जवाब दिया—'अभी नहीं।'

और तारा फिर भी चमक रहा था।

यह अधेड़ उम्र का आदमी बन गया। उसके बाल श्वेत चमकदार होने लगे। एक दिन वह अपनी कुर्सी में अँगीठी के पास बैठा था। उदासी से बहुत भारी बना हुआ था, और उसकी आँखें चमकते आंसुओं से गीली थीं। ऐसे ही समय तारा एक बार फिर खुला।

और उसकी बहन के फरिश्ते ने मुखिया से पूछा—'क्या मेरा भाई आया।'

और उसने कहा—'नहीं लेकिन उसकी एक कुंआरी जवान लड़की।'

और वह आदमी, जो कभी बच्चा था, उसने अपनी लड़की को देखा, जो उससे नयी ही बिछुड़ी थी और जिसके चारों ओर तीन स्वर्गीय प्राणी लिपटे हुए थे और उसने कहा—

मेरी लड़की का सिर मेरी बहन के पक्ष पर है, और उसकी बाहें मेरी माँ की गर्दन में लिपटी हुई हैं और उसके पैरों में एक पुराना बच्च पड़ा हुआ है। तो मैं उसका अपने से बिछुड़ना सह सकता हूँ। सच, परमात्मा बड़ा अच्छा है।

तारा फिर भी चमक रहा था।

इस प्रकार वह बालक एक वृद्ध आदमी बना और पहिले का सुडौल चेहरा बुढ़ापे की रेखाओं से भर गया। उसके कदम धीमे और कमजोर हो गये और उसकी पीठ झुक गई और एक रात्रि को ज्यों ही वह लेटा। उसके लड़के उसके चारों ओर खड़े थे। तभी, वह चिल्लया जैसा वह बहुत पहले चिल्लाया करता था—

'पहला तारा मेरा।'

वे लड़के एक-दूसरे से बुदबुदाए—'वे मर रहे हैं।'

और उसने कहा—'मेरी उम्र मुझ से कपड़ों की भांति गिर रही है और मैं तारे क तरफ बालक की तरह जा रहा हूँ और अब, ओ मेरे परमात्मा! मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि यह तारा अक्सर उनका स्वागत करने के लिए खोला गया, जिन्होंने मेरी प्रतीक्षा की।'

और तारा फिर भी चमक रहा था। और वह उसकी कब्र पर भी चमकता है।

भारतीय कहानी

काबुलवाला

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

मेरी पाँच वर्ष की छोटी लड़की मीनी एक पल भी बात किये बिना नहीं रह सकती। संसार में जन्म ग्रहण करके भाषा सीखने में उसने केवल एक ही साल बिताया था। उसके बाद से जितनी देर तक वह जागती रहती है एक क्षण भी चुप रह कर नष्ट नहीं करती। उसकी मां बहुधा धमका कर उसका मुँह बन्द कर देती है, किन्तु मैं ऐसा नहीं कर सकता। मीनी के चुप रहने से देखने में ऐसा अस्वाभाविक लगता है कि वह मुझसे अधिक समय तक सहा नहीं जाता। इस कारण मेरे साथ उसका कथोपकथन कुछ अधिक उत्साह के साथ चलता है।

सबेरे अपने उपन्यास के सत्रहवें परिच्छेद में मैंने हाथ लगया ही था, कि ऐसे समय में मीनी ने आते ही चिल्लाना शुरू कर दिया—"बाबू जी, रामदयाल दरबान काका काक को 'कौआ' कहता था, वह कुछ नहीं जानता, ठीक है न बाबू जी ?"

संसार में भाषा की विभिन्नता के विषय में उसे मैं समझाने ही जा रहा था कि उसके पहले ही वह दूसरा प्रसंग ले उपस्थित हो गयी। बोली—'देखो बाबू जी, भोला कहता था, आकाश में हाथी सूँड से

जल फेंकता है, इसलिए वर्षा होती है। बाबू जी, भोला इस तरह झूठ-मूठ बकवास करता है न, वह केवल बकता है, दिन रात बकता है।"

इस बातचीत में मेरी थोड़ी सी भी राय जाने बिना, उसने अचानक एक कठिन सवाल नम्र स्वर में पूछा—"मां, तुम्हारी कौन लगती है? बाबू जी यह ही बता दो?"

मैंने मन ही मन 'साली' कहा और बोला—"मीनी, तू जाकर भोला के संग खेल। मुझे अभी बहुत काम करना है।"

उसके बाद ही उसने मेरी लिखने की टेबिल के पास मेरे पैरों के निकट बैठकर अपने दोनों घुटनों और हाथों को हिला-हिला कर अति द्रुत उच्चारण से 'अगड़म-बगड़म' खेलना शुरू कर दिया। मेरे उपन्यास के सत्रहवें परिच्छेद में प्रतापसिंह उस समय काञ्चनमाला को लेकर अन्धेरी रात में कारागार की ऊँची खिड़की से निम्नवर्ती बहती हुई नदी के जल में कूद रहे थे।

मेरा मकान रास्ते के पास ही था। अचानक मीनी 'अगड़म-बगड़म' खेल छोड़ कर खिड़की के पास दौड़ गयी और चिल्लाकर जोर से पुकारने लगी—"कबुलवाला, ऐ काबुलवाला।"

मैले-ढीले कपड़े पहने, माथे पर पगड़ी बांधे, गरदन में सूखे मेवों की झोली लटकाये, हाथ में दो-चार अंगूर के बक्स लिये, एक लम्बा काबुलवाला मन्द गति से रास्ते से जा रहा था। उसको देखकर मेरी लड़की के मन में कैसा भाव जागा, बताना कठिन है, उसको उसने और जोर से पुकारना शुरू कर दिया। मैंने सोचा, इसी क्षण कन्धे पर

झोली लिये एक मुसीबत उपस्थित हो जायगी, मेरा सत्रहवां परिच्छेद आज समाप्त न हो सकेगा ।

किन्तु मीनी की चिल्लाहट से ज्यों ही काबुलवाले ने हँसकर मुँह फेर लिया, और हमारे मकान की तरफ आने लगा, त्योंही वह लम्बी साँस के साथ भीतर भाग गयी, फिर उसका चिन्ह दिखाई न पड़ा कि वह कहाँ छुप गई । उसके मन में एक अन्ध विश्वास था कि इस झोली के भीतर ढूँढ़ने से उसकी ही तरह की दो-चार जीवित बच्चियाँ मिल सकती हैं ।

इधर काबुलवाले ने आकर हँसते हुए चेहरे से मुझे सलाम किया। मैंने सोचा, यद्यपि प्रतापसिंह और काञ्चनमाला की हालत बहुत ही मुसीबत में है, तथापि इस आदमी को घर बुलाकर इससे कुछ न खरीदना अच्छा न होगा ।

कुछ खरीद की गयी । उसके बाद मैंने उससे कुछ अन्य बातें कीं । अबदर रहमान, रूस अंग्रेज प्रभृति को लेकर सीमान्त-रक्षा के सम्बन्ध में बातें होने लगीं ।

अन्त में उठ कर जाते समय उसने अपनी मिली जुली भाषा में पूछा—"बाबू, तुम्हारी लड़की कहाँ गयी ?"

मैंने मीनी का अमूलक भय तोड़ देने की इच्छा से उसको भीतर से बुला भेजा—वह मेरे शरीर से बिलकुल सटकर काबुली के मुँह और झोली की तरफ सन्दिग्ध दृष्टिपात करके खड़ी हो रही । काबुली झोली में से किसमिस और खूबानी निकाल कर उसे देने लगा, उसने कुछ भी नहीं

लिया, वह दुगने सन्देह के साथ मेरे घुटनों के पास सटी रह गयी। इसी प्रकार प्रथम परिचय हुआ।

कुछ दिन बाद, एक दिन सबेरे किसी आवश्यक कार्य से मकान से निकलते समय मैंने देखा, मेरी लड़की दरवाजे के पास बेञ्च के समीप ऊपर बैठकर अनर्गल बातें कहती जा रही है, और काबुलवाला उसके पैरों के निकट बैठकर हँसी से भरे चेहरे से सुन रहा है और कभी-कभी प्रसङ्गक्रम से अपना मतामत भी टूट-फूटी मिली जुली बँगला बोली में व्यक्त करता जाता है। मीनी ने अपने जीवन की पञ्चवर्षीय जानकारी में अपने बाबू जी के अतिरिक्त ऐसा धैर्यवान श्रोता कभी नहीं पाया था। फिर मैंने देखा कि उसका छोटा-सा आंचल बादाम–किसमिस आदि से भरा हुआ है। मैंने काबुलवाले से कहा—"उसको यह सब तुमने क्यों दे दिया ? इस तरह फिर मत देना।" कहकर जेब से एक अठन्नी निकालकर उसे मैंने दे दी। उसने निसंकोच अठन्नी लेकर अपनी झोली में रख ली।

घर लौट कर मैंने देखा, उस अठन्नी से बड़ा भारी झगड़ा उपस्थित हो गया है।

मीनी की माँ एक श्वेत चमकदार गोलाकार पदार्थ हाथ में लेकर भर्त्सना के स्वर से पूछ रही है—"यह अठन्नी तूने कहाँ से पायी ?"

मीनी ने कहा—"काबुलवाले ने दी है।"

उसकी माँ ने कहा—"काबुलवाले से तू ने अठन्नी क्यों ली ?"

मीनी ने रोने की तैयारी करके कहा—"मैंने नहीं माँगी, उसने अपने आप दी थी।"

मैंने जाकर मीनी का उस विपदा से उद्धार किया और बाहर साथ ले गया।

मुझे खबर मिली की काबुलवाले के साथ मीनी की यह दूसरी मुलाकात नहीं थी, इस बीच में वह प्रतिदिन आकर पिस्ता, बादाम घूस देकर उसने मीनी के छोटे से दिल पर बहुत कुछ अधिकार कर लिया है।

मैंने देखा, इन दोनों दोस्तों में कुछ बँधी हुई बातें और मजाक प्रचलित हैं। जैसे रहमत को देखते ही मेरी कन्या हँसते-हँसते पूछने लगती––"काबुलवाला, ऐ काबुलवाला, तुम्हारी उस झोली के अन्दर क्या है ?"

रहमत एक अनावश्यक चन्द्रबिन्दु जोड़कर हँसते-हँसते उत्तर देता—'हाँथी।' यानी उसकी झोली के भीतर एक हाथी है, यही उसके परिहास का सूक्ष्म मर्म था। बहुत अधिक सूक्ष्म हो, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता; फिर भी इस परिहास से दोनों को कुछ विशेष कौतुक मालूम होता था। शरतकाल के प्रभात में एक वृद्ध और एक शिशु का सरल और निर्मल हास्य देखकर मुझे भी बड़ा ही अच्छा लगता।

उन में और भी बातें प्रचलित थीं। रहमत मीनी से कहता–"बच्ची, तुम ससुराल कभी मत जाना।"

हम भारतीयों के घरों की लड़कियां जन्मकाल से ही 'ससुराल' शब्द से परिचित रहती हैं, किन्तु हम लोग जरा-कुछ नये जमाने के होने के कारण छोटी-सी बच्ची को ससुराल के सम्बन्ध में विशेष ज्ञानी न बना सके थे। इस कारण वह रहमत का अनुरोध साफ-साफ

समझ न पाती थी। फिर भी किसी भी बात का कोई जवाब दिये बिना चुप रहना उसके स्वभाव के बिलकुल विरुद्ध था। उलटे वह रहमत से पूछती--"तुम ससुराल जाओगे ?"

रहमत काल्पनिक ससुर को लक्ष्य कर अपनी मोटी मुट्ठी तानकर कहता--"हम ससुर को मारेगा।"

सुनकर मीनी 'ससुर नामक अपरिचित आदमी की दुरावस्था की कल्पना करके खूब हँसती थी।

कुछ दिनों बाद शरत्काल का आगमन हो गया। प्राचीन काल में इसी समय राजा लोग दिग्विजय के लिए निकला करते थे। मैं कलकत्ता छोड़कर कभी कहीं भी नहीं गया, किन्तु इसी कारण मेरा मन सारी धरती पर घूमा करता है। मैं मानों अपने घर के कोने में चिरप्रवासी हूँ, बाहर की धरती के लिए मेरा मन सर्वदा विकल रहता है। किसी विदेश का नाम सुनते ही मेरा चित्त उधर दौड़ने लगता है, उसी प्रकार विदेशी मनुष्य को देखते ही नदी-पर्वत-जङ्गल के बीच एक कुटिया का दृश्य देखने लगता है, और एक उल्लासपूर्ण स्वाधीन जीवन-यात्रा की बात कल्पना में जाग उठती है।

इधर मैं ऐसा उद्भिद प्रकृति का हूँ कि अपना कोना छोड़कर घर से बाहर निकलने में मेरे सिर पर बिजली गिर पड़ती है। इस कारण प्रातःकाल अपने छोटे से कमरे में टेबिल के सामने बैठकर इस काबुली के साथ बातचीत कर मेरे भ्रमण का कार्य बहुत अंशों में हो जाता है। मेरे सामने काबुल का चित्र उपस्थित हो जाता। दोनों तरफ ऊबड़-खाबड़ लाल रंग की ऊँची पर्वत मालायें हैं, बीच

में संकीर्ण मरुस्थल है, उसी से माल से लदे हुए ऊँटों की कतार जा रही है। पगड़ी बांधे हुए व्यापारी और यात्री कोई ऊँट पर सवार है कोई पैदल ही जा रहे हैं। किसी के हाथ में बर्छा है तो किसी के हाथ में पुराने युग की चकमक जड़ी हुई बंदूक है बादलों की गर्जन के स्वर में काबुली टूटी-फूटी हमारी बोली में स्वदेश की बातें करता था, और यह चित्र मेरे नेत्रों के सामने से चला जाता था।

मीनी की माँ अत्यन्त शंकित स्वाभाव की हैं। रास्ते में कोई एक शब्द सुनते ही उन्हें मालूम होता है कि संसार के सभी मतवाले शराबी मेरे ही मकान की तरफ विशेष लक्ष्य रखकर दौड़े आ रहे हैं। यह संसार सर्वत्र ही चोर-डाकू, शराबी-मतवाले, साँप-बाघ, मैलेरिया, सूँआँ कीड़े, तिलचट्टे और गोरों से भरी हुई है यही धारणा उनके मन में बद्धमूल थी। इतने दिन—बहुत ज्यादा दिन नहीं इस संसार में रहते हुए भी यह विभीषिका उसके मन से दूर नहीं हुई।

रहमत काबुलवाले के सम्बन्ध में वे पूर्ण रूप से सन्देहरहित नहीं थीं। उसकी तरफ विशेश दृष्टि रखने के लिए उन्होंने मुझसे बार-बार अनुरोध किया था। मैंने उसका सन्देह हँसकर उड़ा देने की चेष्टा की तो उन्होंने लगातार मुझसे कई प्रश्न किये—"क्या कभी किसी का लड़का चुराया नहीं जाता? क्या काबुल में गुलाम-व्यवसाय प्रचलित नहीं? एक प्रकाण्ड काबुली के लिए एक छोटी सी बच्ची को चुरा ले जाना क्या एक दम असम्भव है?"

मुझे मान लेना पड़ा, यह बात असम्भव नहीं है। किन्तु विश्वास योग्य नहीं है। सब लोगों में विश्वास करने की शक्ति समान नहीं

रहती, इस कारण मेरी स्त्री के मन में भय रह गया । किन्तु, इसी लिए बिना दोष के रहमत को अपने मकान में आने से मैं मना न कर सका ।

प्रति वर्ष लगभग आधा माघ मास के बीतते ही रहमत अपने देश चला जाता है । इस समय वह अपने ग्राहकों से रुपये वसूल करने में बहुत ही व्यस्त रहता है । उसे घर-घर घूमना पड़ता है, फिर भी वह दिन में एक बार मीनी से भेंट कर ही लेता है । देखने में तो वास्तव में ऐसा ही जान पड़ता है कि दोनों में मानो कोई षड्यन्त्र चल रहा है । जिस दिन वह सुबह नहीं आ सकता, उस दिन देखता हूँ कि वह शाम को आ रहा है । अँधेरे कमरे के कोने में उस ढीले-ढाले पायजामा पहने झोलीवाले लम्बे आदमी को देखने से सचमुच ही अकस्मात मन में डर सा उत्पन्न हो जाता है ।

किन्तु जब देखता हूँ कि मीनी, "काबुलवाला, ऐ काबुलवाला" कह कर हँसती-हँसती दौड़ती आती है, और दो असम उम्र के मित्रों में वही पुराना सरल परिहास चलने लगता है, तब मेरा सम्पूर्ण हृदय प्रसन्न हो उठता है ।

एक दिन सुबह अपने छोटे कमरे में बैठकर मैं प्रूफ देख रहा था । बिदा होने के पहले आज दो-तीन दिनों से कड़ाके की सर्दी पड़ रही है । चारों तरफ एकदम इसी की चर्चा होती रहती है । खिड़की की राह से प्रातःकाल की धूप टेबिल के नीचे मेरे पैरों पर आ पड़ी है । उसकी गरमी मुझे बहुत ही मधुर लग रही है । शायद आठ बजे होंगे, सिर पर गुलूबन्द लपेटे ऊषाचरण प्रातः भ्रमण समाप्त करके अपने-अपने घरों को लौट रहे हैं । ऐसे ही समय रास्ते में एक जोर का हल्ला सुनाई पड़ा ।

मैंने देखा कि हमारे रहमत को दो पुलिस के सिपाही बाँधे लिये आ रहे हैं। उसके पीछे जिज्ञासू लड़कों का दल चला आ रहा है। रहमत के पहनावे पर खून का दाग़ है और एक सिपाही के हाथ में खून से लथपथ छुरा है। मैंने दरवाजे से बाहर निकल कर सिपाही को रोक लिया, पूछा—"क्या बात है ?"

कुछ उसके मु ह से, कुछ रहमत के मुँह से सुनकर मैं जान गया कि हमारे पड़ोस में रहने वाले एक आदमी ने रहमत से रामपुरी चादर खरीदी थी, जिसका कुछ दाम बाकी पड़ गया था। उसे झूठ बोलकर उसने अस्वीकार किया। इसी बात को लेकर झगड़ा करते हुए रहमत ने छुरा भौंक दिया है।

रहमत उस झूठे बेईमान को तरह तरह की न सुन सकने वाली गालियां दे रहा था कि उसी समय "काबुलवाला, ऐ काबुलवाला" पुकारती हुई मीनी घर से निकल आई।

रहमत का चेहरा क्षण भर में कौतुक हास्य से प्रफुल्ल हो उठा। उसके कन्धे पर आज झोली नहीं थी, इस कारण झोली के सम्बन्ध में दोनों की अभ्यस्त आलोचना न चल सकी। मीनी ने सीधे उससे पूछा—'तुम ससुराल जाओगे ?"

रहमत ने हँसकर कहा—"वहां ही जा रहा हूँ।"

रहमत समझ गया कि यह उत्तर मीनी के लिए हँसी पैदा करने वाला नहीं हुआ। तब उसने हाथ दिखाकर कहा—"ससुर को मैं मारता। किन्तु करूँ क्या, हाथ बँधा हुआ है।"

खून करने के अपराध में रहमत को जेल की सजा मिली।

उसके बारे में सारी बातें मैं कुछ ही दिनों में भूल गया। हम लोग जब अपने कमरे में बैठ कर अपने सदा के अभ्यास के अनुसार नित्य के कामों में दिन पर दिन बिता रहे थे, तब एक स्वाधीन पर्वतचारी पुरुष कारागृह की चहारदीवारी के भीतर कैसे वर्ष पर वर्ष बिता रहा है, यह बात हमारे मन में उठती ही नहीं थी।

और, चञ्चल हृदय वाली मीनी का आचरण अत्यन्त लज्जाजनक था, यह बात तो उसके बाप को भी स्वीकार करनी पड़ेगी। उसने स्वच्छन्दता से अपने पुराने मित्र को भूलकर पहले नवी साईस के साथ मित्रता जोड़ी। फिर क्रमशः उसकी उम्र जितनी ही बढ़ने लगी, सखाओं के बदले, एक के बाद एक उसकी सखियां जुटने लगीं। यहां तक कि अब वह अपने बाबू जी के लिखने के कमरे में भी नहीं दिखाई पड़ती। मैं तो उसके साथ बिलकुल ही विच्छिन्न हो गया हूँ।

+ + +

कितने ही साल बीत गये। सालों के बाद फिर एक शरद ऋतु आई है। मेरी मीनी का विवाह-सम्बन्ध ठीक हो गया है। पूजा की छुट्टियों में उसका विवाह हो जायगा। कैलाशवासिनी के साथ-साथ अबकी बार मेरे घर की आनन्दमयी मीनी पिता के घर को अँधेरा बना कर पति के घर चली जायगी।

सूर्योदय से प्रभात अति सुन्दर हो गया है। वर्षा के बाद शरत् की यह नयी धुली हुई धूप मानो सोहागे में गलाये निर्मल सोने की

तरह रंग दे रही है । यहां तक कि कलकत्ते की गलियों के भीतर पुरानी ईंटों के गन्दे और परस्पर सटे हुए मकानों के ऊपर भी इस धूप की आभा ने एक तरह का अनुपम लावण्य फैला दिया है ।

हमारे घर में आज अँधेरे से ही शहनाई बज रही है । वह ध्वनि मानो मेरी छाती की पसलियों की हड्डियों में से रो-रोकर बज रही है । करुणा भैरवी रागिनी से वह मानो मेरी आसन्न विच्छेद-व्यथा को सारे विश्व में व्याप्त कर रही है ।

आज मेरी मीनी का विवाह है ।

प्रातःकाल से ही भारी झमेला बढ़ा है, लोगों का आना-जाना हर दम जारी है । आंगन में बांस बाँधकर मण्डप छाया जा रहा है । मकान के प्रत्येक कमरे में और बरामदे में झाड़ लटकाये जा रहे हैं और उनकी टनटन आवाज़ सुनाई दे रही है । पुकार बुलाहट की तो कोई हद ही नहीं है ।

मैं तब अपने लिखने-पढ़ने के कमरे में बैठकर खर्च का हिसाब देख रहा था, उसी समय रहमत आया और सलाम करके खड़ा हो गया ।

मैं पहले उसको पहचान ही नहीं सका । उसकी वह झोली नहीं थी, उसके वे लम्बे-लम्बे बाल नहीं थे, उसके शरीर में पहले का सा तेज भी नहीं था । अन्त में उसका हँसना देखकर मैं उसे पहचान गया ।

मैंने कहा—"क्या बात है रहमत, तुम कब आये ?"

उसने कहा—"कल शाम को जेल से छूटा हूँ।"

यह बात सुनकर मेरे कानों में खट् से बज उठा। किसी खूनी को मैंने अपनी आंखों से नहीं देखा था, इसको देखकर समस्त हृदय मानो संकुचित हो गया। मेरी यह इच्छा होने लगी कि आज के इस शुभ दिन में इस आदमी का यहां से चला जाना ही अच्छा होगा।

मैंने उससे कहा—"आज हमारे घर में काम है, मैं उसी में ज्यादा व्यस्त हूँ, आज तुम जाओ।"

मेरी बात सुनकर वह तुरन्त ही जाने को तैयार हो गया, अन्त में दरवाजे के पास जाकर कुछ इधर-उधर देख कर बोला—"बच्ची को जरा न देख सकूँगा?"

उसके मन में शायद यही विश्वास था कि, मीनी उसी दशा में है। उसने शायद यही सोचा कि, मीनी फिर पहले की ही तरह, "काबुल-वाला, ऐ काबुलवाला" कहती हुई दौड़ती चली आवेगी। उन दोनों के उस अत्यन्त पुराने कौतुकपूर्ण हास्यालाप में किसी तरह की रुकावट न पड़ेगी। यहाँ तक कि पहले की मित्रता को याद कर वह एक पेटी अंगूर और कागज के पोटले में कुछ किसमिस-बादाम, शायद किसी अपने देश के आदमी से माँगकर लेता आया था—उसकी वह झोली आज नहीं थी।

मैंने कहा—"आज घर में कुछ जरूरी काम है, आज किसी से मुलाकात न हो सकेगी।"

वह शायद कुछ उदास हो गया। स्तब्ध भाव से खड़ा रहा, स्थिर

दृष्टि से देखने लगा, फिर "बाबू, सलाम" कह कर दरवाजे से बाहर चला गया।

मेरे मन में न जाने कैसी एक वेदना सी उत्पन्न हुई। मैं सोच ही रहा था कि उसको बुलाऊँ, कि उसी समय मैंने देखा कि वह वापस आ रहा है।

मेरे पास आकर बोला—"ये अंगूर और किसमिस-बादाम बच्ची के लिए लाया था, उसको दे दीजियेगा।"

वह सब लेकर मैं दाम देने लगा तो उसने हठात मेरा हाथ पकड़ कर कहा—"आपकी बहुत मेहरबानी है, बाबू साहब, मुझे हमेशा यह याद रहेगी मुझे आप पैसे मत दीजिये। बाबू, जैसे आपको एक लड़की है, वैसे ही देश में मेरी भी एक लड़की है। मैं उसके ही चेहरे की याद करके आपकी बच्ची के लिए कुछ मेवा हाथ में ले आया करता हूँ, मैं तो सौदा बेचने यहाँ नहीं आता।"

यह कह कर उसने अपने बड़े ढीले-ढाले कुरते के भीतर हाथ डाल कर छाती के पास से एक मैला-कुचैला कागज का टुकड़ा निकाला। बड़े यत्न से उसकी तहों को खोलकर मेरी टेबिल पर रख दिया।

मैंने देखा, कागज के ऊपर एक छोटे से हाथ की छाप है, फोटो नहीं, तैल चित्र नहीं, हाथ पर कुछ कालिख पोत कर कागज के ऊपर उसका निशान ले लिया गया है। कन्या के इस स्मरण-चिन्ह को छाती से सटाकर रहमत प्रति वर्ष कलकत्ता के रास्ते में सौदा बेचने आता है—मानो उसकी बच्ची के सुकोमल छोटे से हाथ का स्पर्श उसके विराट विरही वक्षःस्थल में अमृत संचार करता रहता है।

देखकर मेरे नेत्र छलछला उठे। तब मैं इस बात को बिलकुल ही भूल गया कि वह एक काबुली मेवावाला है और मैं एक उच्च बंगाली वंश का रईस हूँ तब मैं समझ गया कि वह जो है, मैं भी वही हूँ, वह भी पिता है, मैं भी पिता हूँ। उसकी पर्वत-वासिनी छोटी-सी पार्वती के हाथ की निशानी ने मेरी ही मीनी की मुझे याद दिला दी। मैंने उसी क्षण उसको भीतर बुलवाया। अन्दर महल में इस पर काफी आपत्तियां उठीं थीं, किन्तु मैंने किसी तरह भी उन पर ध्यान नहीं दिया। ब्याह की लाल अँगिया पहने वधू-वेशिनी मीनी सलज भाव से मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

उसको देखकर काबुली पहले ठिठक गया, अपना पुराना वार्तालाप न चला सका। अन्त में हँसकर वह बोला—"बच्ची तू ससुर के घर जा रही है?"

मीनी अब ससुराल का अर्थ समझती है, अब वह पहले की तरह उत्तर न दे सकी, रहमत का प्रश्न सुनकर लज्जा के मारे उसका मुँह आरक्त हो उठा, वह मुँह फेर कर खड़ी हो गई। काबुली के साथ मीनी का जिस दिन परिचय हुआ था. मुझे उस दिन की बात याद आई। मेरे मन में एक तरह की व्यथा सी जाग उठी।

मीनी के चले जाने पर एक गहरी लम्बी सांस लेकर रहमत जमीन पर बैठ गया। वह अकस्मात स्पष्ट समझ गया कि उसकी लड़की भी इतने वर्षों में ऐसी ही बड़ी हो गयी होगी। उसके साथ भी फिर नयी जान-पहचान करनी पड़ेगी—उसको ठीक पहले की

तरह वह न देख सकेगा । इन आठ वर्षों में उसकी क्या दशा हुई होगी, इसे भी कौन जाने ! प्रातःकाल शरत् की स्निग्ध सूर्य-किरणों में शहनाई बजने लगी और रहमत कलकत्ता की एक गली में बैठकर अफगानिस्तान के एक मरुपर्वत का दृश्य देखने लगा ।

मैंने एक नोट उसको दिया और कहा—"रहमत, तुम अपने देश अपनी कन्या के पास लौट जाओ । तुम दोनों के मिलन-सुख से मेरी मीनी का कल्याण होगा ।"

यह रुपया दान करने के बाद मुझे उत्सव-समारोह के हिसाब में से एक-एक खर्च छांटकर निकाल देने पड़े । जैसा विचार किया था, वैसा इलेक्ट्रिक बत्तियों का प्रकाश न करा सका, किले से अंग्रेजी बाजे भी नहीं आये । भीतर स्त्रियां अत्यन्त असन्तोष प्रकट करने लगीं, किन्तु एक अनोखे मानवीय मंगल प्रकाश से हमारा शुभ उत्सव उज्ज्वल हो उठा ।

पाकिस्तानी कहानी

पागल

अहमद नदीम कासिमी

"बाबा नूर, कहाँ चले ?" एक बच्चे ने पूछा।

"भाई बस, यहीं ज़रा डाकख़ाने तक।" बाबा नूर बहुत गम्भीरता से उत्तर देकर आगे बढ़ गये।

और सब बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े।

दूसरी तरफ़ से मौलवी क़ुदरतुल्ला आ गये तो बोले, "हँसो नहीं बच्चो। ऐसी बातों पर हँसा नहीं करते। अल्लाह-ताला की ज़ात बड़ी बेपरवाह है।"

बच्चे ख़ामोश हो गये और जब मौलवी क़ुदरतुल्ला चले गये तो वे सब दुबारा खिलखिला के हँस पड़े, "डाकख़ाने जा रहा है बाबा नूर!" एक दूसरे को धक्का मारते हुए वे कहने लगे।

बाबा नूर ने मसजिद की मेहराब के पास रुक कर जूते उतारे। नंगे पाँव आगे बढ़कर मेहराब पर दोनों हाथ रखे। फिर सिर आगे ले जाकर मेहराब को होठों से और नम्बरवार दोनों आंखों से चूमा। उल्टे क़दमों वापस होकर जूते पहने और जाने लगा।

जब बाबा नूर ने मेहराब को चूमा तो बच्चे चुपचाप इधर-उधर गलियों में खिसकने लगे, मानो एक-दूसरे से शरमा रहे हों।

बाबा नूर के सब कपड़े धुले हुए सफ़ेद खद्दर के थे। सिर पर खद्दर की टोपी थी जो बालों की सफ़ेदी के कारण गर्दन तक चढ़ी हुई मालूम होती थी। उसकी सफ़ेद दाढ़ी के बाल अभी-अभी कंघी किये जाने से

सीने पर बड़े अच्छे ढंग से फैले हुए थे। गोरे रंग में जर्दी झलक रही थी। छोटी-छोटी आँखों की पुतलियाँ इतनी काली थीं कि बिल्कुल चीनी गुड़िया की आँखों की तरह नक़ली मालूम होती थीं। कपड़ों, बालों और चमड़ी की बहुत सी सफ़ेदी में ये दो काले भँवरे सी बूँदें बड़ी अजनबी-सी लगती थीं। पर यही अजनबीपन बाबा नूर के चेहरे पर बचपन की सी कैफ़ियत छाई रखते थे। बाबा नूर के कन्धे पर सफ़ेद खद्दर का एक रूमाल भी पड़ा रहता था, जो इस समय बच्चों की भीड़ से मसजिद की मेहराब तक तीन-चार कन्धा बदल चुका था।

"बाबा नूर डाकखाने चले?" एक दुकान के दरवाजे में बैठे हुए युवक दुकानदार ने पूछा।

"हां बेटा जीते रहो!" बाबा नूर ने जवाब दिया और रूमाल को झटक कर दूसरे कन्धे पर सरका लिया।

एक बच्चा पास ही खड़ा था। अचानक ताली बजाकर चिल्लाया "आहा, बाबा नूर डाकखाने चला!"

"भाग जा यहाँ से।" दुकानदार ने बच्चे को धमकाया।

और बाबा नूर, जो कुछ आगे निकल गया था, पलट कर बोला, "डांटते क्यों हो बच्चे को? बच्चा भी कोई डांटने की वस्तु है।" कहता तो ठीक ही है। डाकखाने ही तो जा रहा हूँ।"

दूर-दूर से दौड़-दौड़ कर आते हुए बच्चे यहां से वहां तक बिना बात हँसने लगे और बाबा नूर के पीछे एक जलूस बनने लगा था। मगर आस-पास के कुछ युवक लपक कर आये और बाबा नूर के रोकने पर भी बच्चों को गलियों में भगा दिया।

बाबा नूर अब गांव से निकल कर खेतों में निकल गया था। पगडण्डी मेड-मेड़ जाती हुई अचानक हरे-भरे खेतों में उतर आती, तो बाबा नूर की रफ्तार में कमी आ जाती। वह गेहूँ के कोमल पौधों से पाँव, हाथ और कुर्ते का दामन बचाता हुआ चलने लगता। किसी यात्री की लापरवाही से कोई पौधा अगर पगडण्डी के आर-पार लेटा हुआ

मिलता तो बाबा नूर उसे उठाकर और पौधों की छाती से लिपटा देता और जिस जगह से पौधा मुड़ा होता उसे कुछ यों छूता मानो घाव सहला रहा है। फिर वह खेत की मेड़ पर पहुँच कर पिछली देरी को पूरा करने के लिए तेज चलने लगता। तेज हवा में उसकी दाढ़ी के बाल बिखर-बिखर कर संवरते और रूमाल कन्धे पर से उड़-उड़ जाता। मगर उसकी रफ्तार में कमी उसी वक्त आती जब पगडण्डी फिर से गेहूँ के खेतों में चली जाती।

बाबा नूर मेड़-मेड़ चला जा रहा था। सामने कुछ दूरी पर तीन किसान पगडण्डी पर बैठे हुए हुक्के के कश ले रहे थे। एक किसान लड़की गेहूँ के पौधों के बीच से कुछ इस सफ़ाई के साथ दराँती से घास काटती फिर रही थी कि मजाल है जो गेहूँ के किसी पौधे पर खराश भी आ जाय। बाबा नूर कुछ रुककर लड़की को देखने लगा। वह घास का मुट्ठा काटकर हाथ को पीछे ले जाती और घास को पीठ पर लटकती हुई गठरी में डालकर फिर दरांती चलाने लगती।

"भई कमाल है!" बाबा नूर ने दूर ही से किसानों को कहा; "यह लड़की तो मदारी है। इतनी बड़ी दराँती उठा रखी है। चप्पे चप्पे पर गेहूँ का पौधा उग रहा है, पर दरांती घास काट लेती है और गेहूँ को छूती तक नहीं। यह किसकी बेटी है?"

"तू किसकी बेटी है बिटिया?" लड़की से बाबा नूर ने पूछा।

मुस्कराकर लड़की ने बाबा नूर को देखा। उधर से एक किसान की आवाज़ सुनाई दी, "मेरी है बाबा!"

"तेरी है?" बाबा नूर किसानों की ओर जाने लगा, "बड़ी सयानी बेटी है। बड़ी अच्छी किसान है। ऐसा कमाल तो मैंने तेरी लड़की में देखा है या अपने लड़के में. खुदा इसे बड़ी उम्र दे!"

"डाकखाने जाओगे बाबा?" लड़की के पिता ने पूछा।

"हाँ" बाबा नूर बोला, "खुदा तेरा भला करे! मैंने सोचा, पूछ आऊँ शायद कोई चिट्ठी-विट्ठी आयी हो।"

सीने पर बड़े अच्छे ढंग से फैले हुए थे। गोरे रंग में जर्दी झलक रही थी। छोटी-छोटी आँखों की पुतलियाँ इतनी काली थीं कि बिल्कुल चीनी गुड़िया की आँखों की तरह नक़ली मालूम होती थीं। कपड़ों, बालों और चमड़ी की बहुत सी सफ़ेदी में ये दो काले भँवरे सी बूँदें बड़ी अजनबी-सी लगती थीं। पर यही अजनबीपन बाबा नूर के चेहरे पर बचपन की सी कैफ़ियत छाई रखते थे। बाबा नूर के कन्धे पर सफ़ेद खद्दर का एक रूमाल भी पड़ा रहता था, जो इस समय बच्चों की भीड़ से मसजिद की मेहराब तक तीन-चार कन्धा बदल चुका था।

"बाबा नूर डाकखाने चले?" एक दुकान के दरवाजे में बैठे हुए युवक दुकानदार ने पूछा।

"हां बेटा जीते रहो!" बाबा नूर ने जबाब दिया और रूमाल को झटक कर दूसरे कन्धे पर सरका लिया।

एक बच्चा पास ही खड़ा था। अचानक ताली बजाकर चिल्लाया "आहा, बाबा नूर डाकखाने चला!"

"भाग जा यहाँ से।" दुकानदार ने बच्चे को धमकाया।

और बाबा नूर, जो कुछ आगे निकल गया था, पलट कर बोला, "डांटते क्यों हो बच्चे को? बच्चा भी कोई डांटने की वस्तु है।" कहता तो ठीक ही है। डाकखाने ही तो जा रहा हूँ।"

दूर-दूर से दौड़-दौड़ कर आते हुए बच्चे यहां से वहां तक बिना बात हँसने लगे और बाबा नूर के पीछे एक जलूस बनने लगा था। मगर आस-पास के कुछ युवक लपक कर आये और बाबा नूर के रोकने पर भी बच्चों को गलियों में भगा दिया।

बाबा नूर अब गांव से निकल कर खेतों में निकल गया था। पगडण्डी मेड-मेड़ जाती हुई अचानक हरे-भरे खेतों में उतर आती, तो बाबा नूर की रफ्तार में कमी आ जाती। वह गेहूँ के कोमल पौधों से पाँव, हाथ और कुर्ते का दामन बचाता हुआ चलने लगता। किसी यात्री की लापरवाही से कोई पौधा अगर पगडण्डी के आर-पार लेटा हुआ

मिलता तो बाबा नूर उसे उठाकर और पौधों की छाती से लिपटा देता और जिस जगह से पौधा मुड़ा होता उसे कुछ यों छूता मानो घाव सहला रहा है। फिर वह खेत की मेड़ पर पहुँच कर पिछली देरी को पूरा करने के लिए तेज़ चलने लगता। तेज़ हवा में उसकी दाढ़ी के बाल बिखर-बिखर कर संवरते और रूमाल कन्धे पर से उड़-उड़ जाता। मगर उसकी रफ्तार में कमी उसी वक्त आती जब पगडण्डी फिर से गेहूँ के खेतों में चली जाती।

बाबा नूर मेड़-मेड़ चला जा रहा था। सामने कुछ दूरी पर तीन किसान पगडण्डी पर बैठे हुए हुक्के के कश ले रहे थे। एक किसान लड़की गेहूँ के पौधों के बीच से कुछ इस सफ़ाई के साथ दराँती से घास काटती फिर रही थी कि मजाल है जो गेहूँ के किसी पौधे पर खराश भी आ जाय। बाबा नूर कुछ रुककर लड़की को देखने लगा। वह घास का मुट्ठा काटकर हाथ को पीछे ले जाती और घास को पीठ पर लटकती हुई गठरी में डालकर फिर दरांती चलाने लगती।

"भई कमाल है!" बाबा नूर ने दूर ही से किसानों को कहा; "यह लड़की तो मदारी है। इतनी बड़ी दराँती उठा रखी है। चप्पे चप्पे पर गेहूँ का पौधा उग रहा है, पर दरांती घास काट लेती है और गेहूँ को छूती तक नहीं। यह किसकी बेटी है?"

"तू किसकी बेटी है बिटिया?" लड़की से बाबा नूर ने पूछा।

मुस्कराकर लड़की ने बाबा नूर को देखा। उधर से एक किसान की आवाज़ सुनाई दी, "मेरी है बाबा!"

"तेरी है?" बाबा नूर किसानों की ओर जाने लगा, "बड़ी सयानी बेटी है। बड़ी अच्छी किसान है। ऐसा कमाल तो मैंने तेरी लड़की में देखा है या अपने लड़के में. खुदा इसे बड़ी उम्र दे!"

"डाकखाने जाओगे बाबा?" लड़की के पिता ने पूछा।

"हाँ" बाबा नूर बोला, "खुदा तेरा भला करे! मैंने सोचा, पूछ आऊँ शायद कोई चिट्ठी-विट्ठी आयी हो।"

तीनों किसान एकदम उदास हो गये। उन्होंने एक ओर हटकर पगडण्डी छोड़ दी और बाबा नूर आगे बढ़ गये।

"तुमने क्यों पूछा ?" एक किसान ने लड़की के पिता से पूछा।

"पूछना नहीं चाहिए था।।" दूसरे किसान ने कहा।

और लड़की का बाप सचमुच शर्मिन्दा होकर पगडण्डी पर उँगलियों से लकीरें खींचने लगा।

अभी बाबा नूर खेत के दूसरे सिरे पर पहुँचा था कि लड़की की आवाज़ आयी, "लस्सी पिओगे बाबा नूर ?"

बाबा नूर ने मुड़कर देखा और गाँव से निकलने के बाद पहली बार मुस्कराया, "पी लूँगा बिटिया।" फिर ज़रा-सा रुककर बोला, "प्यासा तो नहीं हूँ; पर तू क्यों राही को लस्सी-पानी पिलाकर पुन्न न कमाए, ले आ।" रूमाल को एक कन्धे से दूसरे पर डालकर वह बोला, "पर देख, ज़रा जल्दी से ला दे। डाक का मुन्शी हवा के घोड़े पर सवार आता है। चला न जाए।"

लड़की ने घास की लटकती हुई गठरी कन्धे से उतार कर वहीं खेत में रखी। फिर वह मेढ़ पर उगी हुई बेरी के पास आई। तने की ओट में पड़े हुत बरतन को खूब हिलाया, एलोमोनियम का कटोरा भरा और दौड़कर बाबा नूर के पास जा पहुँची।

बाबा नूर ने एक ही लम्बी घूँट में सारा कटोरा पीकर रूमाल से होंठ साफ़ किये और बोला, "तेरा भाग इस लस्सी की तरह साफ़-सुथरा हो बिटिया !" फिर वह आगे चला गया।

पाठशाला के बरामदे में डाक का मुन्शी बहुत से आदमियों के बीच बैठा अपने अपने फार्म भर रहा था और देहातियों को नयी-नयी मालूमात से मालामाल कर रहा था : "लाहौर पाकिस्तान का सबसे बड़ा शहर है पर लोग कहते हैं कि अब कराँची पहले नम्बर पर है, पर मैं कहता हूँ कि लाहौर चाहे सिमट कर गाँव बन जाये पर लाहौर आखिर लाहौर ही है।"

"वह तो ठीक है", एक देहाती बोला, "पर खुदा करांची की भी शिकायत न कराए। मेरा साला वहां चपरासी का काम करता था। जब वह मरा है तो मुझे वहां जाना पड़ा। बात यह है मुन्शी जी कि एक बार कराँची जरूर देख लो, चाहे वहाँ गधा गाड़ी में ही जुतना पड़े। वहाँ इतनी मोटरकारें हैं कि हमारे गाँव में उतनी चिड़ियां भी न होंगी। एक-एक मोटर में वह-वह औरत ज़ात बैठी है कि अल्लाह दे और अल्लाह ही ले! वहाँ बन्दा न लेने में है न देने में। अल्लाह की क़ुदरत याद आ जाती है। नमाज़ पढ़ने को जी चाहने लगता है। एक सेठ कह रहा था कि बस एक और बड़ी लाम लग जाए तो कराँची विलायत बन जाए!"

"सेठ की·········।" मुन्शी जी ने एक भद्दी सी गाली बक दी।

"बात तो सुनो मुन्शी जी," वह बोला, "ख्वाम-ख्वाह बेचारे को गाली जड़ दी। सत्य ही तो कहता है। उसने मुझे बताया था कि कितनी बार लाम लगी पर लगते-लगते रह गई। कोई न कोई यह कहकर बीच में लाम को रोक देता है कि लाम में आदमी मरेंगे। कोई पूछे, लाम न लगी तब भी आदमी तो मरेंगे। लाम में गोले से मरेंगे, वैसे फ़ाक़े से मर जायेंगे। लाम लगे तो नौकरियाँ भी तो लगती हैं।"

"ऐसी नौकरी को मारो गोली" मुन्शी जी ने फ़ार्म पर जोर से मोहर लगाते हुए कहा।

"तुम ने तो यही लाम लगा दी मुन्शी जी।" देहाती बोला और सब लोग हँस पड़े।

मगर मुन्शी नहीं हँसा। वह सामने देख रहा था और कुछ ऐसे टकटकी बाँधे देख रहा था, जैसे उसकी निगाह किसी खास बिन्दु पर जम गयी हो। उसका रंग उड़ गया और होठों की सारी नमी एकदम सूखकर पपड़ी बन गयी।

उदास स्वर में धीरे से बोला, "बाबा नूर आ रहा है।"

सब लोगों के सिर अचानक मानो एक ही झटके से मुड़े और सबके चेहरे मुरझा कर रह गये।

सफेद बाबा नूर सीधा पाठशाला के बरामदे की तरफ आ रहा था। अन्य लोग सहमे जा रहे थे। एक-दो तो जैसे घबराकर उठ भी गये।

बाबा नूर अभी दूर ही था जब मुन्शी रह न सका और बोला, "आओ बाबा नूर, आओ!"

बरामदे के पास पहुँचकर बाबा नूर ने पूछा, "डाक आ गई मुन्शी जी?"

"आ गयी बाबा।" मुन्शी जी ने उत्तर दिया।

"मेरे बेटे की चिट्ठी-विट्ठी तो नहीं आई?" बाबा नूर ने कहा।

"नहीं बाबा" मुन्शी ने उत्तर दिया।

"बड़ी खिलन्दरी तबीयत का है!" बाबा नूर बोला, "चिट्ठी ही नहीं लिखता।"

और फिर बाबा नूर ने रूमाल को एक कन्धे पर से उतार कर झटका दिया और दूसरे कन्धे पर रखकर चुपचाप वापस चला गया। और जब दूर पगडण्डी पर वह रुई का एक फाया सा बन कर रह गया तो मुन्शी बोला, "यारो! कोई बताओ मैं क्या करूँ? आज दस वर्ष से बाबा नूर इसी तरह आ रहा है और यही सवाल पूछता है। और आज दस वर्ष से मैं उसे यही जवाब दे रहा हूँ। बेचारे को यह याद ही नहीं रहा कि सरकार की वह चिट्ठी मैंने ही तो उसे पढ़कर सुनाई थी जिसमें लिखा था कि तेरा बेटा बर्मा में बम के गोले का शिकार हो गया। तब से वह पागल सा हो गया है और हर दसवें-बीसवें दिन बेटे की चिट्ठी लेने आ निकलता है। पर मुझे खुदा की कसम है दोस्तो कि यदि आज के बाद वह फिर भी मेरे पास यही पूछने आया तो मुझे भी पागल कर जायेगा।

मनोविज्ञान पुस्तकमाला–१
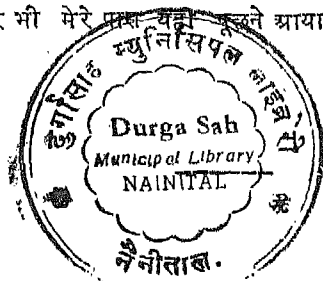
बच्चों की समस्याएँ

—श्रीमती सुदेश बी० ए०

मानव जीवन में मनोविज्ञान का स्थान सदैव ही सर्वोपरि रहा है। समाज का क्या कर्त्तव्य है ? मनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत ही विकसित है बच्चे के जन्म से पूर्व ही माँ के पेट से ही बच्चे के स्वभाव का गठन शुरू हो जाता है और जीवन-पर्यन्त उसका मनोविकास होता रहता है ऐसी अवस्था में माँ का क्या कर्त्तव्य है ? पाँच साल तक मनोविज्ञान में वह कैसे मदद दे और कैसे समाज उसकी क्रीड़ाओं को कसौटी पर कसे ? बच्चे के खेल खिलौने कैसे हों ? उसके वस्त्र किस प्रकार के हों ? उसकी भाषा को किस तरह विकसित किया जाये ? इन सब समस्याओं का इस में वर्णन है। पाठक समस्याओं का हल भी इस छोटी सी पुस्तक में प्राप्त कर सकते हैं, लेखिका की यही सफलता है।

लेखिका मनोविज्ञान की पंडिता नहीं है। उसने अपने सफल जीवन से संग्रहीत किये हुए अनुभवों को संकलित करने का प्रयास किया है।

मूल्य १.२५ पृष्ठ ६४